हु. बहिर्जी स्मारक विद्यालय शिक्षण संस्था, वापटी संचलित

बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय

वसमतनगर, जि. हिंगोली

छत्रपती शिवाजी महाराज
विशेषांक २०२३-२४

छत्रपती शिवाजी महाराज विशेषांक २०२३-२४

मुख्य संपादक
प्रा. डॉ. बाबुराव भिवाजी खंदारे

संपादक मंडळ
डॉ. एच. के. उंडेगावकर, डॉ. प्रदीप जाधव
डॉ. पांडुरंग बर्वे, डॉ. निरंजन अकमार

संपादन साहाय्य
डॉ. सुकेश ढेंबरे, प्रा. दिलीप मोरे

प्रकाशक
प्राचार्य,
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, वसमतनगर, जि. हिंगोली

विद्यार्थी संपादक मंडळ
अजय गायकवाड, संतोष खंदारे ऋतुजा सातभाई, ममता कानकुटे,
निकिता लोंढे, मारोती कदम

मुखपृष्ठ / मांडणी
विजयकुमार चित्तरवाड, राजेश्वर क्रिएशन्स, नांदेड

मुद्रण
आर्टी ऑफसेट, लातूर

या अंकात व्यक्त झालेल्या मतांशी संपादक मंडळ व महाविद्यालय प्रशासन सहमत असेलच असे नाही.

हु. बहिर्जी स्मारक विद्यालय शिक्षण संस्था, वापटी

ता. वसमतनगर, जि. हिंगोली

कार्यकारी मंडळ

०१)	मा. जयप्रकाश रावसाहेब साळुंके (दांडेगावकर)	अध्यक्ष
०२)	मा. ॲड. मुंजाजीराव नारायणराव जाधव	उपाध्यक्ष
०३)	मा. पंडितराव रामराव देशमुख	सचिव
०४)	मा. उमाकांत अनंतराव शिंदे	कोषाध्यक्ष
०५)	मा. नितीन नागनाथराव जाधव (महागावकर)	सह-सचिव
०६)	ॲड. रामचंद्र खोबराजी बागल	सदस्य
०७)	ॲड. अशोकराव नागोराव सावंत	सदस्य
०८)	मा. शंकरराव गंगारामजी कऱ्हाळे	सदस्य
०९)	मा. अनिल केशवराव नादरे	सदस्य
१०)	ॲड. अजय सीताराम करंडे	सदस्य
११)	मा. प्रल्हादराव रामराव सावंत	सदस्य
१२)	मा. राम निवृत्ती झुंझूर्डे	सदस्य
१३)	सौ. बेबीताई उमाकांतराव शिंदे	सदस्या
१४)	श्री प्रविण गोपाळराव शेळके	शिक्षक प्रतिनिधी
१५)	प्रा. डॉ. नवनाथ नानाराव लोखंडे	शिक्षक प्रतिनिधी

हु. बहिर्जी स्मारक विद्यालय शिक्षण संस्था, वापटी

ता. वसमतनगर, जि. हिंगोली

महाविद्यालय विकास समिती

०१)	मा. जयप्रकाश रावसाहेब साळुंके (दांडेगावकर)	अध्यक्ष
०२)	ॲड. मुंजाजीराव नारायणराव जाधव	कार्याध्यक्ष
०३)	मा. पंडितराव रामराव देशमुख	सदस्य
०४)	डॉ. व्ही.टी. नरवाडे	सदस्य (प्राध्यापक प्रतिनिधी)
०५)	डॉ. प्रदीप जाधव	सदस्य (विभाग प्रमुख प्रतिनिधी)
०६)	डॉ. सविता अवचार	सदस्य (प्राध्यापक प्रतिनिधी)
०७)	श्री एन. पी. देशमुख	सदस्य (शिक्षकेत्तर कर्मचारी प्रतिनिधी)
०८)	मा. सुभाष लालपोतू	सदस्य (उद्योग क्षेत्र व माजी विद्यार्थी प्रतिनिधी)
०९)	मा. बाबुराव सटवाजी खिल्लारे	सदस्य (शिक्षण क्षेत्र प्रतिनिधी)
१०)	मा. दत्तात्रय गुरुनाथ हेर्लेकर	सदस्य (संशोधन क्षेत्र प्रतिनिधी)
११)	मा. वामनराव वै. सूर्यवंशी	सदस्य (समाजसेवा क्षेत्र प्रतिनिधी)
१२)	डॉ. करुणा देशमुख	सदस्य (समन्वयक, महाविद्यालय अंतर्गत गुणवत्ता हमी समिती)
१३)	-	सदस्य (विद्यार्थी परिषदेचा सचिव)
१४)	डॉ. मा. मा. जाधव	प्र. प्राचार्य, सदस्य सचिव

Bahirji Smarak Mahavidyalaya, Basmathnagar, Dist. Hingoli (MS)

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

1)	Prof. Dr. M. M. Jadhav	Chairperson
2)	Dr. K. P. Deshmukh	Co-ordinator
3)	Hon'ble Jaiprakash Dandegaonkar	Member from Management
4)	Hon'ble Adv. Munjajirao Jadhav	Member from Employer
5)	Hon'ble Panditrao Deshmukh	Member from Employer
6)	Hon'ble Adv. R. K. Bagal	Member from Employer
7)	Dr. V. T. Narwade	Member
8)	Dr. M. B. Swami	Member
9)	Dr. S. R. Dhembre	Member
10)	Dr. P. B. Barve	Member from Administrative Staff
11)	Dr. Rajesh Desai	Member from Alumni
12)	Dr. A. B. Mugutkar	Placement Cell
13)	Dr. Smt. S. S. Awchar	Librarian
14)	Dr. S. S. Patange	Member Secretary
15)	Prof. N. K. Akmar	Sports Director

अ नु क्र म णि का

■ छत्रपती शिवाजी महाराज	अजय गायकवाड	११
■ वीरो को वीर छत्रपती शिवाजी महाराज	संतोष हिरामन खंदारे	१३
■ छत्रपती शिवाजी महाराज ३५० राज्याभिषेक सोहळा	सातभाई ऋतुजा कैलास	१५
■ शासन और व्यक्तित्व		१८
■ शिवाजी महाराज	ममता भगवान कानकुटे	२०
■ छत्रपती शिवरायांचा गनिमी कावा		२२
■ शिवाजी महाराजांचे धर्मनिरपेक्षतेसंबंधी विचार	निकिता सतीश लोंढे	२५
■ छत्रपती शिवाजी महाराज	कदम मारोती सखाराम	२७
■ पुण्यवंत, नितीवंत, जाणता राजा	वैभव रामा मांडवकर	३०
■ वास्तविक शिवराय आणि आजचे शिवराय		३३
■ छत्रपती शिवाजी महाराज	आझादे संध्या पिराजी	३९
■ छत्रपती शिवाजी महाराज	जमघाडे निवृत्ती महादजी	४३
■ एक तेजस्वी सूर्य	आरती केशव इंगोले	४५
■ छत्रपती शिवाजी महाराज	काकडे पौर्णिमा अशोक	४७
■ छत्रपती शिवाजी महाराज यांचा ३५० वा राज्याभिषेक सोहळा	अनिकेत बालाजी सोनटक्के	४९
■ जाणता राजा	दिपाली गौतम कदम	५१
■ युगप्रवर्तक, लोककल्याणकारी राजा छत्रपती शिवाजी महाराज...	भुसावळ कोमल विशाल	५३
■ छत्रपती शिवाजी महाराज	कदम कोमल सिताराम	५५

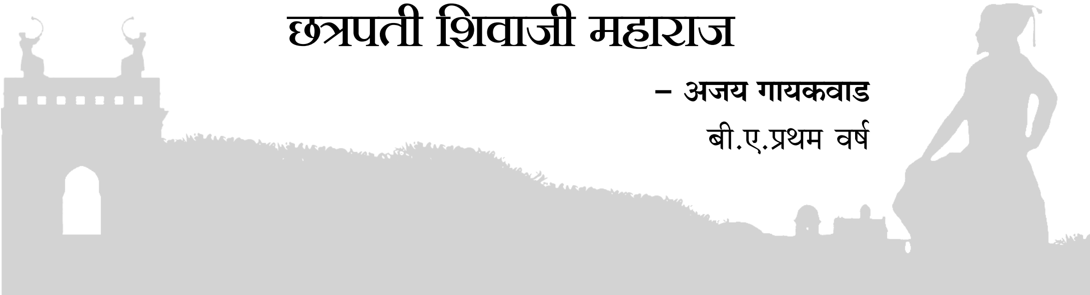

छत्रपती शिवाजी महाराज

– **अजय गायकवाड**
बी.ए.प्रथम वर्ष

छत्रपती शिवाजी महाराज एक साहसी योद्धा व कुशल प्रशासक थे. उनका जनम १९ फरवरी १६३० को महाराष्ट्र के पुणे जिले में शिवनेरी दुर्ग पर हुआ था. उनके पिता का नाम शहाजीराजे भोसले व माता का नाम जिजाबाई था.

शिवाजी महाराज बचपन से ही बहादूर व होशियार थे. माता जिजाबाई जी ने उन्हे अच्छे संस्कार दिए. तलवार चलाना, घोडेस्वारी, धर्म संस्कृती और राजनीती की भी उचित शिक्षा दी. दादोजी कोंडदेव शिवाजी महाराज के गुरू थे. छत्रपती शिवाजी महाराज ने आदिलशाह, पोर्तुगीज, सिद्दी जैसी शक्तिशाली सत्ताओं को पराभूत किया और महाराष्ट्र में मराठा साम्राज्य स्थापन किया.

६ जून १६७४ को शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ. लोगों को एक आदर्श राजा मिल गया. और माता जिजाबाई का सपना पूरा हो गया. शिवाजी महाराज महिलाओं का, किसानों का व सभी धर्मी का सम्मान करते थे.

३ अप्रैल १६८० को शिवाजी महाराज का स्वर्गवास हुआ. शिवाजी महाराज बुद्धिमान, शौर्यवीर और दयालू शासक थे. हमें भी उनके समृद्ध विचारों को अपने आचरण में लाना चाहिए और देश का नाम रोशन करना चाहिए.

परिवार एवं गुरू :

छत्रपती शिवाजी महाराज का विवाह सन १४ मई १६४० में सईबाई निंबालकर के साथ हुआ था. उनके पुत्र का नाम संभाजी था. संभाजी शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी थे. जिसने १६८० से १६८९ इ. तक राज्य किया. संभाजी में अपने पिता की कर्मठता और दृढ संकल्प का अभाव था. उनका पुत्र और उत्तराधिकारी राजाराम थे. शिवाजी के गुरू समर्थ गुरू रामदास का नाम भारत के साधू संतो व समाज में सुविख्यात है.

शिवाजी का पराक्रम :

युवावस्था में आते ही उनका खेल वास्तविक कर्म शत्रू बनकर शत्रूओं पर आक्रमण कर उनके किले आदि भी जितने लगे. जैसे ही शिवाजी महाराज ने पुरंदर और तोरणा जैसे किलो पर अपना अधिकार जमाया वैसे ही उनके नाम और कर्म की सारे दखिण में धूम मच गई. यह खबर आग की तरह आगरा और दिल्ली तक जा पहूंची. अत्याचारी किसम के यवन और उनके

सहायक सभी शासक उनका नाम सुनकर ही मारे डर के भाग जाते. शिवाजी के बढते प्रताप से आंतकित बीजापूर के शासक आदिलशाह जब शिवाजी को बंदी न बना सका तो उन्होने शिवाजी के पिता शहाजी को गिरफ्तार कर लिया. पता चलने पर शिवाजी आग बबुला हो गए. उन्होने नीति और साहस का सहारा लेकर छुपामारी का जल्द ही अपने पिता को इस कैद से आजाद कराया. तब बीजापूर के शासक ने शिवाजी को जिवित अथवा मुर्दा पकड लाने का आदेश देकर अपने मक्कर सेनापति अफजल खाँ को भेजा. उसने भाईचारे व सुलह का झुठा नाटक रचकर शिवाजी को अपनी बाहों के घेरे में लेकर मारना चाहा, पर समझदार शिवाजी के हात में छिपे बघनख का शिकार होकर वह स्वयं मारा गया.

छत्रपती शिवाजी महाराज एक भारतीय शासक थे, जिन्होने मराठा साम्राज्य खडा किया था. इसीलिए उन्हे एक अग्रगण्य वीर एवं अमर स्वतंत्रता सेनानी सवीकार किया जाता है.

■

वीरो को वीर छत्रपती शिवाजी महाराज

– संतोष हिरामन खंदारे
बी.ए.प्रथम वर्ष

हर दुश्मन को सबक सिखाना ही इनका काम है

जो किसी के आगे कभी ना झुके

वीर शिवाजी उनका नाम है...

१९ फरवरी १६३० को पुणे के पास स्थित शिवनेरी के दुर्ग में जन्मे छत्रपती शिवाजी महाराज एक सहज नेता थे और उन्होने मराठा साम्राज्य की स्थापना की जिसने शक्तिशाली मुगलो को डरा कर रख दिया. शिवाजी की माँ जिजाबाई भी व्यक्तित्व से बहुत मजबूत थी. वह गुणी थी और उन्होने अपने पुत्र शिवाजी को निडर बनाने के लिए उचित शिक्षा दी. शिवाजी रामायण और महाभारत की वीरता और महिमा सुनकर बडे हुए. उन्होने इन दो महाकाव्यों की शिक्षाओं का भी पालन किया, लेकिन उन्होने कभी ताकत के सामने झुकना नही सिखा.

६ जून १६७४ छत्रपती शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण मोउ था. जिससे इस संप्रभू और शक्तिशाली हिंदू साम्राज्य की नींव पडी. यह साम्राज्य गुप्त, मौर्य, चोल, अहोम और विजयनगर साम्राज्य की ही तरह शक्तिशाली, सुसंगठीत और सुशासित था. छत्रपती शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक एक महान हिंदवी साम्राज्य की स्थापना करते हुए विभाजनकारी और दमनकारी इस्लामी शासन का प्रतिरोध किया. उन्होने राष्ट्रीय स्तर पर हिंदू धर्म का पुनरुत्थान और प्रसाद सुनिश्चित किया. शिवाजी ने पुरंदर और तोरण जैसे किलो पर अपना अधिकार जमाया वैसे ही उनके नाम और कर्म की सारे दखिण में धूम मच गई. यह खबर आग की तरह आगरा और दिल्ली तक जा पहुंची. अत्याचारी किस्म के यवन और उनके सहायक सभी शासक उनका नाम सुनकर ही मारे डर के बगले झाकने लगे.

शिवाजी के बढते प्रताप से आतंकित बीजापूर के शासक आदिलशाह जब शिवाजी को बंदी न बना सके तो उन्होने शिवाजी के पिता शाहजी को गिरफ्तार किया. पता चलने पर शिवाजी आग बबुला हो गए, उन्होने नीति और साहस का सहारा लेकर छापामारी कर जल्द ही अपने पिता को इस कैद से आजाद कराया. जब बीजपूर के शासक ने शिवाजी को जीवित अथवा मुर्दा पकड लाने का आदेश देकर अपने मक्कार सेनापती अफजल खाँ को भेजा. उसने भाईचारे

व सुलह का झुटा नाटक रचकर शिवाजी को अपनी बाहो के घेरे में लेकर मारना चाहा. पर समझदार शिवाजी के हाथ में छिपे बघनख का शिकार होकर वह स्वयं मारा गया. इससे उसकी सेनाए अपने सेनापती को मरा पाकर वहा से दुम दबाकर भाग गई.

मराठो ने न केवल मुगलो को हराया, बल्कि अठरावी शताब्दी के अधिकांश समय में ब्रिटिश सेना को भी भारत पर कब्जा करने से रोका और १६७४ में छत्रपती शिवाजी महाराज ने अपनी नौसेना स्थापित किया था. शिवाजी महाराज ने समंदर में पूर्तगालियों से कोकण और गोवा की सुरक्षा के लिए बनाई थी. मराठा नौसेना के पास करीब ५ हजार नौसैनिक और ५७ वॉरशिप्स थी. छत्रपती शिवाजी महाराज अपने जीवनकाल में २०० से जादा किले जीते.

बिना रुके हर कठीनाई में कदम आगे बढाना
आसन नहीं है मातृभूमि पर शीष चढाना.
जय भवानी जय शिवाजी.

■

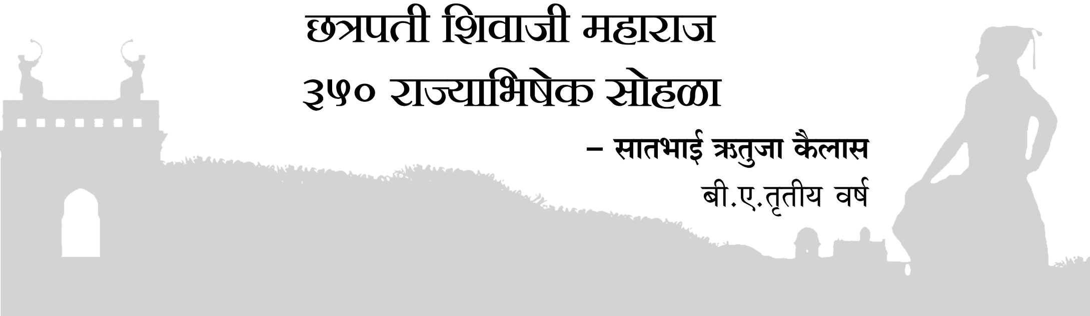

छत्रपती शिवाजी महाराज
३५० राज्याभिषेक सोहळा

– सातभाई ऋतुजा कैलास
बी.ए.तृतीय वर्ष

शिवाजी महाराज जैसे वीर योद्धा सदियों तक याद किए जाते रहेंगे. शिवाजी महाराज का राज्याभिशेक एक ऐसा स्वणमि क्षण था, जिससे इतिहास में एक नया मोउ आया था. हिंदू कॅलेंडर के अनुसार, शिवाजी का शिवराज्याभिषेक १५५९ में ज्येष्ठ महिने के पहले खवाडे के १३ वे दिन हुआ था. जिसके हिसाब से ६ जून को छत्रपति शिवाजी महाराज राज्याभिषेक २०२२ मनाया गया. जिसे शिवराज्याभिषेक सोहळा २०२२ भी कहा जाता है. इस खास दिन पर जानिए शिवाजी के बारे में रोचक और ज्ञानवर्धक तथ्य.

६ जून १६७४ को छत्रपती शिवाजी को रायगढ किले में तक भव्य समारोह में मराठा साम्राज्य के राजा का ताज पहनाया गया था. हिंदू कॅलेंडर के अनुसार १५९६ में ज्येष्ठ महिने के पहले पखवाडे के १३ वे दिन शिवाजी का शिवराज्याभिषेक हुआ था.

ऐसे हुआ था महान योद्धा का राज्याभिषेक :

शिवाजी को सात नदियों यमुना, सिंधू, गंगा के पवित्र जल से राज्याभिषेक किया गया था. जिसमें गोदावरी, नर्मदा, कृष्ण और कावेरी से शिवाजी के सिर पर डालते हुए और वैदिक राज्याभिषेक मंत्रो का जाप करते हुए किया गया था. स्नान के बाद शिवाजी ने जिजाबाई को प्रमाण किया और उनके पैर छुए. इस राज्याभिषेक समारोह में रायगए में लगभग पचास हजार लोग एकत्र हुए. शिवाजी एक युग के संस्थापक और छत्रपति जिसके मायने संप्रभू होता है उसके हकदार थे. उनहे हिंदवी धर्मोधारक (हिंदू धर्म के रक्षक) की उपाधि भी मिली थी. मान्यता ये भी है कि शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के साथ ही एक हिंदू राज्य अस्तित्व में आया. ये भी कारण है कि शिवाजी का राज्याभिषेक लोक बहुत उत्साह और सममन के साथ मनाते है. यह शिवाजी महाराज के जवीन, कार्य और योगदान को याद करने का दिन है.

पुणे जिले के जुन्नार शहर के पास, शिवनेरी के पहाडी किले में जन्मे शिवाजी जिसने मराठा साम्राज्य की उत्पत्ति का गठन किया. शिवाजी महाराज की माँ जिजाबाई थी. स्थानीय देवी शिवई के नाम पर उनका नाम शिव रखा गया, जिनसे उनकी माँ जिजाबाई ने एक पुत्र की याचना की थी. उसने ६ साल तक मराठा साम्राज्य पर शासन किया.

धर्मनिरपेक्ष नेता :

ऐसे समय में जब सभी राज्यय अपनी धार्मिक मान्यताओं पर सख्ती से टिके हुए थे और दुससरो के साथ दूर हो रहे थे, शिवाजी आश्चर्यजनक रुप से सभी धर्मो को बराबर महत्त्व दिया. भारतीय नौसेना के पिता के रूप में जाने वाले शिवाजी ने सबसे पहले नौसेना बल होने के महत्त्व को महसूस यिका और इसलिए उन्होने रणनीतिक रूप से महाराष्ट्र के कोकण पक्ष की रक्षा के लिए समुद्र तट पर एक नौसेना और किलो की स्थापना की. जयगढ, विजयदुर्ग, सिंधुदुर्ग और ऐसे अन्य किले अभी भी उनके प्रयासों और विचारों को गवाही दे रहे है.

शिवाजी महिलाओं और उनके सन्मान के एक भरोसेमंद समर्थक थे. उन्होने महिलाओं के खिलाफ हर तरह की हिंसा, उत्पीडन और अपमान का उल्लंघन करते हुए पकडा जाता था, उसे कडी सजा दी जाती थी.

शिवाजी को माऊंटेन रैट कहा जाता था और उन्हे उनकी गुरिल्ला युद्ध रणनीति के लिए जाना जाता था. उन्हे अपनी भूमी के भूगोल के बारे में जागरुकता, और छापामार रणनीति जैसे छापा मारने, हमला करने और अपने दुश्मनो पर आश्चर्यजनक हमले करने के कारण ऐसा कहा जाता था. वह एक अच्छी सेना के महत्त्व को समझते थे, और अपने कौशल्य के साथ अपने पिता की २००० सैनिको की सेना को १० हजार सैनिको तक बढा दिया.

शिवाजी अपने अधिक शक्तिशाली दुश्मनो को हराने के लिए भूगोल, गति और आश्चर्य जैसे रणनीतिक कारकों जैसे गैर पारंपारिक तरीको के आसपास केंद्रीत अपनी अभिनव सैन्य रणनीति के लिए जाने जाते है.

स्वराज्य. स्वतःच राज्य निजामांच्या छाताडावर उभं राहून उभारलेलं राज्य अर्थात स्वराज्य. माँ साहेब आणि आबासाहेब यांच्या स्वप्नाची शौर्यगाथा म्हणजे स्वराज्य. माजलेल्या यवनांचा चिथडा उडवायचा असेल तर एकच मार्ग आहे, तो म्हणजे स्वराज्य आया-बहिणींना सुरक्षित ठेवायचं, धार्मिक स्थळांना जपायचं असेल तर स्वराज्य उभं करावच लागेल. जिजाऊ या दूरदृष्टीकोन ठेवत लहानपणापासून माजलेल्या मुघलांचा मिन बघत झालेल्या या माजलेल्या गिधड्यांना कापायचं असेल तर फक्त एकच उपाय ते म्हणजे मराठी रयतेचं स्वराज्य.

अखंड हिंदूस्थानचे आराध्य दैवत छत्रपती शिवाजी महाराज आपल्या आईच्या डोळ्यात दिवसरात्र विस्तवासमान तळपत राहणारं स्वप्न अर्थात स्वराज्य या स्वराज्याचा पाया घालावा कसा योग्य तिथी, दिवस सण काही न पाहता शिवशंकराच्या पिंडीवर करंगळी कापून त्या शिवलिंगाला रक्ताभिषेक घालून स्वराज्याची शपथ घेतली आणि खेळण्या बागडण्याच्या वयात शिवबा स्वराज्याच्या कल्पवृक्षाला वाढवीत होते. माणसं जमा केली, तरूण सवंगड्यासोबत ज्येष्ठ सरदारांच्या विचारांना सुद्धा अग्रगण्य मानले.

शक्तीपेक्षा युक्ती श्रेष्ठ मानले. यवन कापायचा नाही तर मुळातूनच कसा उपटायचा

याचा सखोल अभ्यास शिवरायांना होता. आपल्या वयाच्या तरुणांना सोबत घेऊन राजांनी आपली फौज तयार केली. अफझलखानासारख्या धिप्पाड हैवानाला धुळीस मिळवणे सोपे नव्हते. पण आपल्या युक्तिवादातून सक्षम नियोजनातून आणि साथीदारांच्या भक्कम सहाय्यामुळे अफझलखानाला त्याच्याच छावणीत जाऊन फाडला असे युक्तिवाद पुन्हा बघता आले. लाल महलात शाहिस्तेखानाला पळता भुई थोडी केली.

पन्हाळा वेढा, सुरतची लुट, पुरंदरचा पट, आग्रा भेट तेथून सुरक्षित सुट या सगळ्यांमध्ये शिवरायांचा युक्तिवाद बघायला भेटला. परकीय आक्रमकांत योग्य पद्धतीने धूळ चारली. त्या काळात एका सरदाराच्या मुलाने संपूर्ण परकीय आक्रमकांना तोंडावर पाडणे काही साधी बाब नव्हती. मुघल असो, इंग्रज असो, मराठ्यांना चार हात लांबूनच सलाम ठोकायचा.

छत्रपती शिवाजी महाराज हिंदवी साम्राज्याचे राजे होते, यात तीळमात्रही शंका नाही. पण तत्वतः त्याचे स्थान राजा किंवा सम्राटासमान नव्हते. कारण ते अभिशक्ति राजा नव्हते, शिवरायांनी कितीही संपत्ती मिळवली तसेच त्यांचे नौदल कितीही भक्कम असेल तरी ते जमीनदार होते. शिवाय विजापुरात एका सरदाराचा बंडखोर मुलगा म्हणून त्यांना ओळखत.

त्या काळाची व्यवस्था पाहता शिवराय अभिशिक्त सम्राट नसूनही त्यांनी स्वराज्याचे राजा होते. रयतेचा राजा होते, पण या रयतेच्या राजाला अभिषिक्त सम्राट व्हावे लागले. पण ते सोपे व सहज शक्य नव्हते. कारण प्राचीन हिंदू धर्म ग्रंथानुसार क्षत्रिय धर्मीयच अभिषिकेक्त सम्राट होऊ शकतो आणि शिवबा हे कुणबी होते, आणि त्यांना राजा होणे शक्य नव्हते. तसेच भारतातील सर्व ब्राह्मणांचे आशिर्वाद मिळणे अशक्य होते. या राज्याभिषेकाला विरोध करणाऱ्यांना गप्प करण्यासाठी पंडितांची गरज होती. ती गरज काशीच्या गागाभट्टांच्या स्वरुपाने पूर्ण झाली.

सुरुवातीला अडचणी आल्या. पण गागाभट्टांनी शिवबांना क्षत्रिय कलवंत म्हणून स्वीकारले. कारण भोसले कुळ हे उदयपूरच्या क्षत्रिय कुळातील होते. भोसले कुळ हे उदयपुरच्या घराण्यांचे वंशज तर प्रभू रामचंद्रांच्या सूर्य काळातील शुद्ध क्षत्रिय वंश आहे हे सिद्ध झाले. या खाऽीशीर पुराव्यावरच गागाभट्ट हे महाराष्ट्रात आले. हा राज्याभिषेकाचा सोहळा सुरू होणार होता.

बत्तीस हृदयाचे सुवर्ण सिंहासन तयार करण्यात आले. सारा मौल्यवान खजिना सिंहासन तयार करण्यासाठी बाहेर आणले गेले. रायरिकाला रायगड म्हटले गेले. सप्तनंद्या, मुख नदी, समुद्र सर्व नामांकित तीर्थाचे पाणी आणले. राज्याभिषेकासाठी आठ सुवर्ण कलश तयार करण्यात आले. राज्याभिषेकाचा सोहळा थाटात उभा होता. मराठा साम्राज्याच्या प्रथम राजाचा राज्याभिषेकाची तिथी ठरविण्यात आली. शालिवाहन शके १५९६ ज्येष्ठ महिन्याची शुक्ल त्रयोदशी हा शुभ दिवस म्हणून आणि मुहूर्त ठरवण्यात आला.

■

शासन और व्यक्तित्व

शिवाजी को एक कुशल और प्रबुद्ध सम्राट के रुप में जाना जाता है. यदापि उनके अपने बचपन में पारंपरिक शिक्षा कुछ खास नही मिली थी, पर वे भारतीय इतिहास और राजनीति से सुपरिचित थे. उन्होने शुक्राचार्य तथा कौटिल्य को आदर्श मानकर कुटनीति का सहारा लेना कई बार उचित समझा था. अपने समकालीन मुगलों की तरह वह भी निरंकुश शासक थे. अर्थात शासन की समूची बागडोर राजा के हाथ में ही थी. पर उनके प्रशासकीय कार्यो में मदद के लिए आठ मंत्रियों की एक परिषद थी, जिनहे अष्टप्रधान कहा जाता था. इसमें मंत्रियों के प्रधान को पेशवा कहते थे, जो राजा के बाद सबसे प्रमुख हस्ती था. अमात्य वित्त और राजस्व के कार्यो को देखता था तो मंत्री राजा की व्यक्तिगत दैनंदिनी का खयाल रखता था. सचिव दफ्तरी कम करते थे जिसमें शाही मुहर लगाना और संधि पत्रों का आलेख तैयार करना शामिल होते थे. सुमन्त विदेश मंत्री था. सेना के प्रधान को सेनापती कहते थे. दान और धार्मिक मामलों के प्रमुख को पण्डितराव कहते थे. न्यायाधीश न्यायिक मामलों का प्रधान था.

मराठा साम्राज्य तीन या चार विभागों में विभक्त था. प्रत्येक प्रान्त में एक सुभेदार था, जिसे प्रान्तपति कहा जाता था. हरेक सुभेदार के पास भी एक अष्टप्रधान समिती होती थी. कुछ प्रान्त केवल करदाता थे और प्रशासन के मामलों के स्वतंत्र, न्यायव्यवस्था प्राचीन पद्धती पर आधारित थी. शुक्राचार्य, कौटिल्य और हिंदू धर्मशास्त्रो के आधार मानकर निर्णय दिया जाता था. चौथ पडोसी राज्यों की सुरक्षा की गारंटी के लिए वसूले जाने वाला कर था. शिवाजी अपने को मराठों का सरदेशमुख कहते थे. और इसी हैसियत से सरदेशमुखी कर वसूली जाता था.

राज्याभिषेक :

सन १६७४ तक शिवाजी ने उन सारे प्रदेशों पर अधिकार कर सिया था, जो पुरंदर की संधि के अंतर्गत उन्हे मुगलों को देने पडे थे. पश्चिमी महाराष्ट्र में स्वतंत्र हिंदू राष्ट्र की स्थापना के बाद शिवाजी ने अपना राज्याभिषेक करना चाहा, परंतु मुस्लिम सैनिको ने ब्राह्मणों को धमकी दी की जो भी शिवाजी का राज्याभिषेक करेगा उनकी हत्या कर दी जायेगी, जब ये बात शिवाजी तक पहूंची की मुगल सरदार ऐसे धमकी दे रहे है, तब

शिवाजी ने इसे एक चुनौती के रुप में लिया और कहा की अब वो उस राज्य के ब्राह्मण से ही अभिषेक करवायेंगे जो मुगलो के अधिकार में है.

शिवाजी के निजी सचिव बालाजी ने काशी में तीन दूतो को भेजा, क्यूंकी काशी मुगल साम्राज्य के अधीन था. जब दूतों ने संदेश दिया तो काशी के ब्राह्मण काफी प्रसन्न हुए. किंतु मुगल सैनिको को यह बात पता चल गई तब उन ब्राह्मणों को पकड लिया. परंतु युक्तिपूर्वक उन ब्राह्मणों ने मुगल सैनिकों के समक्ष कहा की हमे कही अन्यत्र जाना है. शिवाजी किस वंश से है अपने नही बताया अतः ऐसे में हम उनके राज्याभिषेक कैसे कर सकते है. मुगल सरदार ने खुश होके ब्राह्मणो को छोड दिया और दूतो को पकड कर औरंगजेब के पास दिल्ली भेजने की सोची पर वो भी चूपके से निकल भागे.

वापस लौटकर उन्होने ये बात बालाजी आव तथा शिवाजी को बताई. परंतु आश्चर्यजनक रूप से दो दिन बाद वही ब्राह्मण अपने शिष्यों के साथ रायगड पहूंचे और शिवाजी का राज्याभिषेक किया. सके बाद मुगगों ने फूट डालने की कोशषि की और शिवाजी के राज्याभिषेक के बाद भी पुणे के ब्राह्मणों को धमकी दी कहा कि शिवाजी को राजा मानने से मना करो. ताकि प्रजा भी इसे न माने. लेकीन उनकी नही चली. शिवाजी ने अष्टप्रधान मंडल की स्थापना की. विभिन्न राजयों के दूतो, प्रतिनिधियों के अलावा विदेशी व्यापारियों को भी इस समारोह में आमं९ित करा गया. पर उनके राज्याभिषेक के १२ दिन बाद ही उनकी माता का देहांत हो गया था. इस कारण से ४ अक्तूबर १६७४ को दूसरी बार शिवाजी ने छत्रपती की उपाधि ग्रहण की. दो बार हुए इस समारोह में लगभग ५० लाख रुपये खर्च हुए. इस समारोह में हिंदवी स्वराज्य की स्थापना का उद्देश किया गया था. विजयनगर के पतन के बाद दक्षिण में यह पहला हिंदू साम्राज्य था. एक स्वतंत्र शासक की तरह उन्होने अपने नाम का सिक्का चलवाया. इसके बाद बीजापूर के सुलतान ने कोंकण विजय के लिए अपने दो सेनाधिशों को शिवाजी के विरूद्ध भेजा पर वे असफल रहे.

■

शिवाजी महाराज

– **ममता भगवान कानकुटे**
बी.ए.द्वितीय वर्ष

भारतीय इतिहास के महापुरुषों में शिवाजी महाराज का नाम प्रमुख है. शिवाजी महाराज जीवनभर अपने समकालीन शासको के अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष करते रहे.

उनका जन्म सन १६३० इ. को महाराष्ट्र के शिवनेरी के किले में हुआ था. इनके पिता का नाम शाहजी और माता का नाम जिजाबाई था. शाहजी पहले अहमदनगर की सेना में सैनिक थे.

वहा रहकर शाहजीने बडी उन्नती की और वे प्रमुख सेनापती बन गए. उनकी माता जिजाबाई बचपन से ही उनको बउे बडे वीर योद्धाओं की कहानियाँ सुनाती थी, जिसकी वजह से वो बचपन से ही शौर्य व साहसी बने. शिवाजी महाराज विख्यात राजनीति कहलाते है. छत्रपती शिवाजी महाराज इतने बहादूर थे की उन्होने १४ वर्षे की उम्र से ही कई दुसरे निजामों से लउाई की और उनको हराकर कई किल्लों पर कब्जा किया. स्वराज्य स्थापन करना उनका एकमात्र लक्ष्य था. उन्होन मराठा साम्राज्य की स्थापना के लिए कई लढाईया लढी. उन्हे संस्कृत और हिंदू शास्त्रो का भी बहुत ज्ञान था. वे एक बहादूर, बुद्धिमान, शौर्यवीर और दयालू शासक थे.

छत्रपती शिवाजी महाराज का महिलाओंप्रती आदर :

बात है सन १६३८ की स्वराज्य की शपथ लेकर कुछ ३ साल हो चुके थे. १८ साल के राजे शिवछत्रपती अपने सुभबुससे सेना का गठन कर रहे थे. तानाजी मालुसरे, यसाजी जैसे परमवीरो के बल पर शिवाजी महाराज ने स्वराज्य को बनाना शुरू किया था. छत्रपती शिवाजी महाराज के शुरुवाती दिनो में उनके एक सहकारिक हुआ करते थे. जिनका नाम था आबाजी. ओ एक कुशल सेनानी और महाराज के बचपन के दोस्त थे. महाराज के कई सारे विजय मोहिमों में आबाजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा. आबाजी को लेकर इतिहास में एक बात हमेशा महत्त्वपूर्ण होती है. हर साल १६३८ के सलीम छत्रपती शिवाजी महाराज के नेतृत्व में विर आबाजी ने ठाने प्राप्त को मलेजीस आजाद कराने की योजना बनाई उस वक्त ठाने प्रांत में कल्याण नाम का शहर बडा महत्त्वपूर्ण इलाका था. वहा के सुभेदार का नाम अहमद था. आबाजी ने नासिक सुभेदार अहमद को हराया, बल्कि कई सारी मौल्यवान वस्तू तथा सोने चांदी को स्वराज्य के नाम किया.

पर वहा विर आबाजी ने अंजाने में एक गलती करी है. जब हिरे, मोती, जवाहर को पालखी से छत्रपती शिवाजी के निवासस्थान पर लेकर जा रहे थे तब आबाजी और मोरोपंत ने सुभेदार की बहु को भी बंदी बनाया था. उनहोने सोचा महाराज इसे अपनी राणी बना लेंगे.

जब मोरोपंत पिंगले ओर आबाजी महाराज के सामने आऐ तो पिंगले महाराज को बताते है, सेनापती आबाजी ठाने प्रांत को जितकर वहा का सारा सोना, खजाना लेकर आये है. कल्याण विजयपर छत्रपती शिवाजी महाराज के चेहरे पर खुशी चमकती है. पर एकाएकी सुभेदार की बहु तो महाराज के सामने लाया जाता है. कल्याण विजय के संवाद के बाद सुभेदार की बहु को आपकी सेवा में लाने की बात सुनकर छत्रपती शिवाजी महाराज के चेहरे की प्रसन्नता लुप्त हो जाती है. उस मुस्लीम स्त्री को देखकर छत्रपती शिवाजी महाराज उर्दू में बोलते है, माँ... शिवा अपने सेनापती की इस नामाकुल हरकत पर आपसे माफी चाहते है. इसके बाद आबाजी को छत्रपती शिवाजी महाराज समझाते है की पर स्त्री हर एक के लिए माता समान है.

इस ऐतिहासिक क्षण को बहुत सारे ऐतिहासकारो ने अपने अपने अंदाज में वर्णीत किया है. कुछ इतिहासकारों का मानना है की उस स्त्री को देखकर महाराज ने ये भी कहा था की मौत अगर आपके इतनी हमारी भी माँ सुंदर होती तो हम भी सुंदर होते...

महिला के प्रती जानता राजे की इस प्रतिक्रिया को ऐतिहासिक महत्त्व है. उस दौरान महाराज की आयू १८ साल की थी, उनके राज्य में महिलाओं को पूर्ण आजादी मिली. पर स्त्री के साथ दुरव्यवहार करने वालो को छत्रपती शिवाजी महाराज सिर्फ मृत्यूदंड दिया करते थे.

छत्रपती शिवाजी महाराज ये मराठा साम्राज्यिक संस्थापक थे. उनके गुरु का नाम दादोजी कोंडदेव थे. छत्रपती शिवाजी महाराज ने स्वराज्य के रक्षण की शपथ ली थी. जब वे पुणे में कारभार संभाल रहे थे. तब उन्होने राजमुद्रा तयार की थी,

'प्रतिपंच्चदलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववंहिता।
शाहूसूनोः शिवस्थैषा मुद्रा भद्राय राजते।।'

उनका जन्म शिवनेरी किले में हुआ था. इस किले में शिवाई नामक देवी का एक मंदिर है. उसी देवी के नाम पर जिजाबाई उनका नाम शिवाजी रखा. १६७४ में शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ. तब से वे छत्रपती शिवाजी महाराज केहलाए. वे सभी धर्मो का आदर करते थे. सन १६८० में छत्रपती शिवाजी महाराज का निधन हुआ.

■

छत्रपती शिवरायांचा गनिमी कावा

४०० वर्षे होऊनही ज्या राजांची आपण जयंती साजरी करतो तो राजा म्हणजे 'स्वराज्य संस्थापक छत्रपती शिवाजी महाराज.' शिवरायांचे कार्य, चरित्र, व्यक्तिमत्त्व एवढे प्रेरणादायी आहे की, आज २४० देशांपैकी १११ देशांत शिवजयंती साजरी केली जाते. छत्रपती शिवाजी महाराज यांना घडविण्याचे सर्वात मोठे श्रेय जाते ते माँ साहेब जिजाऊंच्या संस्कारांना. जिजाऊंच्या सर्वधर्मसमभाव, स्त्रीबद्दल आदरतेची भावना, अंधश्रद्धा निर्मूलन दिसून येते. शिवाजी महाराजांचे लहानपणीचे खेळ म्हणजे रस्सीखेच, भालाफेक, मातीचा किल्ला बनवणे, मातीचे हत्ती-घोडे बनवणे, भवरा फिरवणे, लपंडाव असे खेळ शिवबा आपल्या सवंगड्यासोबत खेळत असत. खेळून आल्यावर संध्याकाळी शूरवीरांच्या व संतांच्या गोष्टी ऐकत. आपल्या मुलाने चाकरी न करता 'स्वतःचे राज्य म्हणजे स्वराज्य' सथापन करावे असे जिजाऊंना वाटत होते व तशीच जडणघडण त्या शिवबांच्या व्यक्तिमत्त्वाची करीत होत्या.

आपल्या स्वराज्याच्या संरक्षणासाठी गडकिल्ले आपल्या ताब्यात असले पाहिजे आणि गड किल्ले मिळवण्यासाठी जीवाला जीव देणाऱ्या मावळ्यांची फौज तयार केली पाहिजे. ही शिकवण त्यांना बालपणापासून होती. छत्रपती शिवाजी महाराज अठरा पगड जातीतील लोकांना सोबत घेऊन स्वराज्यनिर्मिती करीत होते. शिवाजी महाराजांवर संत तुकाराम महाराजांच्या अभंग वाणीचा प्रभाव होता. परंतु 'शिवाजी महाराजांनी अभंगात, धार्मिक कार्यात, रमु नये, राजाने प्रजेचे संरक्षण करणे हे राजाचे आद्यकर्तव्य आहे' असे तुकोबांनी शिवाजी महाराजांना सांगितले.

एकदा शिवाजी महाराज एका लढाईत हरले. तेव्हा त्यांना अत्यंत दुःख झाले. परंतु माँ जिजाऊंनी त्यांना समजावून सांगितले की, 'तुम्ही ही हरलेली लढाई पुन्हा जिंकू शकता, परंतु त्यासाठी तुम्हाला असे दुःखी होऊन चालणार नाही, तुम्ही पुन्हा रणनीती तयार करा.' जिजाऊंच्या प्रेरणेने व मार्गदर्शनाने शिवाजी महाराजांनी पुन्हा आपले मावळे बोलावले. आपल्या काय चुका झाल्या, आपल्याकडे कोणत्या गोष्टींची कमतरता होती त्या शोधल्या, तसेच शत्रूकडे आपल्यापेक्षा कोणत्या गोष्टी

अधिक चांगल्या होत्या त्यांचाही शोध घेतला. आपल्या झालेल्या चुका दुरुस्त केल्या. कमतरता परिपूर्ण केल्या. पुन्हा नव्या जोमाने, तयारीने लढाईसाठी सज्ज झाले. शत्रूला फर्मान पाठवले. जी लढाई ते हारले होते तीच लढाई महाराज पुन्हा जिंकले. त्यानंतर त्यांनी प्रत्येक लढाईमध्ये गनिमी काव्यांचा वापर केला.

चारही बाजूने चाल करून येणाऱ्या मुघलांशी, निजामशाही, कुतुबशाही, आदिलशाही, गोरगरीब निशस्त्र जनतेवर हल्ला करत. पैसा अडका पळवीत. निष्पाप मुक जनावरांची कत्तल करत. स्त्रियांना-मुलींना देखील पळवीत. अशी भुरटी कारस्थाने रोखण्यासाठी शिवाजी महाराजांना 'गनिमी कावा' करावा लागला. गनिमी कावा म्हणजे शत्रूला फसवून हल्ला करायचा. गनिमी कावा ही युद्ध करण्याची अनोखी पद्धत. रणशिंग फुंकले की भिडायचे व पुन्हा संध्याकाळी रणशिंग वाजले की निघून जायचे हे शिवाजी महाराजांना मान्यच नव्हते. आपल्या वेळेनुसार यायचं, शत्रूला फटकायचं व निघून जायचं, म्हणजेच गनिमी कावा करायचा.

'गनिमी कावा' म्हणजे शत्रू कावा, म्हणजेच फसवून केलेला हल्ला. कमी सैन्यबळात शत्रूला फसवून शरणागती पत्करायला लावून युद्ध जिंकणे म्हणजे गनिमी कावा होय. एकदा वापरलेली चाल, युक्ती राजे पुन्हा वापरत नसत. निसर्गातील बदलत्या वातावरणाचा, सह्याद्रीच्या दुर्गमतेचा वापर करत छत्रपतींनी अनेक गनिमी कावे केले.

चंद्ररावचा महाबळेश्वर ते रायगडावरील ताबा व त्यांनी चालवलेली चालाखी शिवरायांना वेळीच समजली. जावळीचे घनदाट जंगल, जावळीतून जोडलेल्या अनेक वाटा व जावळीचे भौगोलिक महत्त्व या गनिमी काव्यास उपयोगाचे होते. चंद्ररावामुळे स्वराज्यात पडणारी फुट थांबविण्यासाठी व स्वराज्याच्या सीमा वाढविण्यासाठी गनिमी कावा केला. शरण येण्याची बतावणी करत एकदमच हल्ला केला. याच जावळीत 'प्रतापगडाचा किल्ला' बांधला व गनिमी कावा रचून अफजलखानला प्रतापगडाच्या पायथ्याशी बोलवले. घाबरलो अशी खोटी बातमी दिली. अफजलखान भलताच चतूर आहे हे शिवाजी महाराजांना माहिती होते. म्हणून निशस्त्र भेटीची अट असूनही अंगरख्याखाली चिलखत व न दिसणारी वाघनखे याद्वारे अफजलखानाचा कोथळाच बाहेर काढला. शत्रूवर विजय मिळवला. हे सर्व गनिमी काव्यातून शक्य झाले.

'उंबरखिंडच्या लढाईत' अनोखा वेगळाच गनिमी कावा घडविला. कारतलब खानने चालवलेली लुटालूट थांबविण्यासाठी व उंबरखिंडचा निसर्ग वैभव टिकवण्यासाठी दूरदृष्टीतून गनिमी कावा आखला. केवळ ४० लहान तोफांची रचना करीत सगळीकडे निरव शांतता ठेवली. शत्रूला गाफिल ठेवले. शत्रूचा प्रवेश होताच त्यांच्या घोडदळ व तोफांचा गाड्यांवर, ४० तोफांवर त्यांचे सर्व आरमार उद्धवस्त केले. शरणागतीला आलेला शत्रूवर

हल्ला केला नाही तर तह केला. भरपूर खंडणी व खनिज्यांच्या पेट्या मिळवल्या. यातून स्वराज्याची साधनसामग्री चतुराईने बळकट केली. हे सर्व गनिमी काव्यातून शक्य झाले. अविवेकाचा, अन्यायाचा नाश करीत गनिमी काव्यातून शत्रूवर विजय मिळवलेली बरीच उदाहरणे आज इतिहासात पहायला मिळतात.

शिवाजी महाराजांनी 'लाल महालात' घुसून शाहिस्तेखानाची तीन बोटे कापलीच. त्याचप्रमाणे त्यांची फौजही उद्ध्वस्त करण्यासाठी गनिमी कावा आखला. लाल महालातून राजे कोंढाण्यावर आले. गाडीवरील दरवाजे उघडेच ठेवण्याची आज्ञा दिली. गडावर 'ना सैनिक ना तौफा' काहीच दिसत नवहते. गउ मोकळाच समजून शाहिस्तेखानाची फौज दाखल होताच बेसावध शत्रूवर छुपे हल्ले करण्यात आले. शत्रूला फसवून केलेल्या हल्ल्यामुळे शत्रूची सगळी फौजच उद्ध्वस्त झाली. अशी शाहिस्तेखानाची फजिती केवळ गनिमी काव्यामुळे झाली.

एका गनिमी काव्याचा एवढा उच्चांक होता की, औरंगजेबाला फसवून पेठाऱ्यातूनच महाराजांनी सुटका करून घेतली. त्यावेळी मुघलांनी चालवलेला प्रचंड नाश व त्यांचे अफाट सामर्थ्य महारजांना दिसत होते. तात्पुरती माघार घ्यायची व संधी मिळताच डाव साधायचे ठरवले.

■

शिवाजी महाराजांचे धर्मनिरपेक्षतेसंबंधी विचार

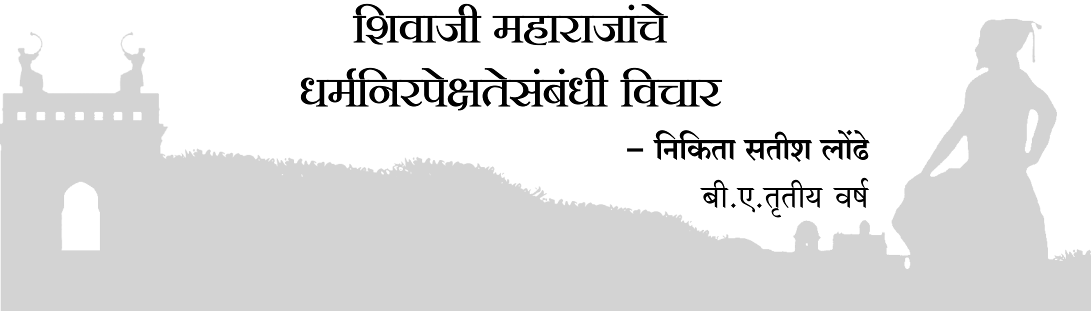

– निकिता सतीश लोंढे
बी.ए.तृतीय वर्ष

धर्मनिरपेक्ष छत्रपती शिवाजी महाराज :

छत्रपती शिवाजी महाराजांनी जात-पात-धर्म असा भेदभाव कधीच पाळला नाही. एक राजा म्हणून सर्व जातीच्या लोकांना अगदी समानतेची वागणूक दिली. त्यासोबतच प्रत्येक धर्माला आदराची वागणूक दिली. कोणताही धर्म श्रेष्ठ-कनिष्ठ असे विचार त्यांनी कधीच बाळगले नाही. प्रत्येक धर्माचा ते आदर करीत असत. त्यामुळेच शिवाजी महाराजांनी आरमारांचे प्रमुख दौलतखान होते. मदारी मेहतर, शिवाजी महाराजांचे वकील तर काजी हैदर हे विश्वासू व्यक्ती तसेच त्यांचे पायदळ सैन्य प्रमुख इब्राहीम खान, सहकारी सेवक शिवाभावी, त्यांचे प्रख्यात हेर बहिर्जी नाईक, जिवामहाला असे अनेक जाती धर्माचे मावळे शिवाजी महाराजांसोबत होते. हे सर्व अगदी निष्ठावंत होते. या मावळ्यांनी अनेकदा आपला जीव महाराजांसाठी धोक्यात घातला होता. याचे कारण महाराजांचा त्यांच्यावर प्रचंड विश्वास होता. महाराज धर्मनिरपेख होते. जात, धर्म, पंथ याऐवजी व्यक्तिमहत्त्वाला मानत असत.

१. महाराज व्यक्तीला महत्त्व देत :

महाराज नेहमी म्हणत असत की, माझ्यासाठी व्यक्ती महत्त्वाचा आहे, त्याची जात, धर्म, पंथ माझ्यासाठी महत्त्वाचे नाही. त्यामुळेच इब्राहीम खान, दौलत खान असे मुस्लीम अधिकारी केवळ त्यांच्या सैन्यातच होते असे नाही तर ते महाराजांचे जवळचे आणि निष्ठावंत होते. धर्मनिरपेक्षतेची शिकवण, माँ जिजाऊ साहेब यांच्याकडून लहानपणीच मिळाली.

२. स्वराज्यांचे शत्रू ते आमचे शत्रू :

स्वराज्य रक्षणाच्या कामी जो व्यक्ती आला तयाला महाराजांनी महत्त्व दिले. त्यांचा आदर केला. मग तो कोणत्याही जात, धर्म, पंथ धर्माचा असो. महाराजांनी त्यांना जवळ केले. जे स्वराज्य निर्मिती, स्वराज्य संरक्षणात बाधा निर्माण करत होते, त्यांना महाराजांनी खरे शत्रू मानले आणि हे शत्रू त्यांचे सगेसोयरे, आप्त सकील होते. यामध्ये घोरपडे, निंबाळकर, सावंत, सुर्वे आदींचा समावेश होता. हे सोयरे महाराजांच्या विरोधात होते. यांचा अर्थ सगेसोयरे, आप्त सकील होते. म्हणून महाराजांनी या लोकांना कधीच जवळ केले नाही.

३. सवधर्मीय म्हणून माफी नाही :

छत्रपती शिवाजी महाराज धर्मनिरपेक्ष होते,

हे अनेक घटनांवरून सिद्ध होते. स्वधर्मातील व्यक्तीकडून जरी चूक झाली तरी स्वधर्मीय म्हणून त्याला माफी नव्हती. गुन्हा करणारा व्यक्ती जर जवळचा किंवा सवधर्मीय आहे, म्हणून त्याला महाराजांनी कधीच माफी दिली नाही. त्यांनी सर्वांना समान शासन लागू केले होते. या धोरणावरून कळते की शिवाजी महाराज हे धर्मनिरपेक्ष शासनकर्ते होते.

४. धार्मिक स्वातंत्र्य :

छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या स्वराज्यात प्रत्येक व्यक्तीला आपआपल्या धर्माप्रमाणे आचरण करण्याचे पूर्ण स्वातंत्र्य होते. महाराज प्रत्येक धर्माचा आदर करत असत. त्यामुळे प्रजा धार्मिक आचरणाबाबत पूर्ण स्वातंत्र्य उपभोगत असत. म्हणून सांगावं वाटतं की,

जात कोणती पुसू नका, धर्म कोणता पुसू नका...

माणुसकीचे आम्ही उपासक, माणुसकीला पुसू नका...

छत्रपती शिवाजी महाराज यांनी फक्त अठरापगड जाती, सर्व धर्मच एकत्र केले नव्हते तर ते इतर देशातील लोकांचा देखील आदर करत होते.

■

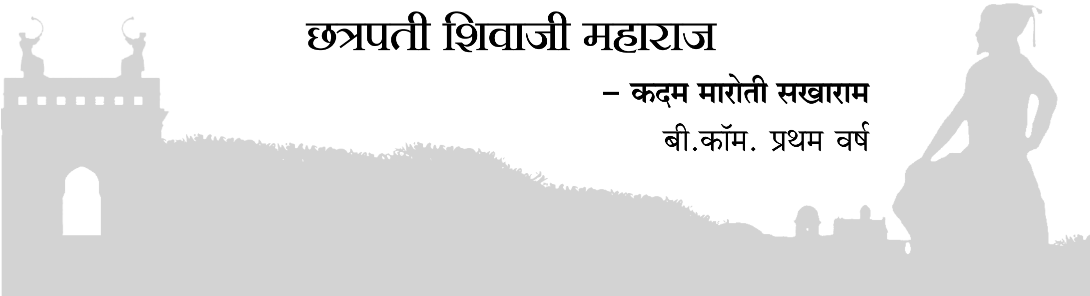

छत्रपती शिवाजी महाराज

– कदम मारोती सखाराम
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

प्रारंभिक जीवन :

पुणे जिल्ह्यातील जुन्नर शहरानजीक वसलेल्या शिवनेरी या डोंगरी किल्ल्यावर १९ फेब्रुवारी १६३० मध्ये छत्रपती शिवाजी महाराजांचा जन्म झाला. इतिहासाच्या अभ्यासकामध्ये छत्रपती शिवाजी महाराजांची नेमकी जन्मतारीख हा मतभेदाचा मुद्दा आहे. महाराष्ट्र राज्य शासनाने फाल्गुन वैद्य तृतीय शके १५५१ (शुक्रवार, १९ फेब्रुवारी १६३०) ही शिवरायांची जन्मतारीख २००१ साली स्वीकारली. इतर संभाव्य तारखेमध्ये ६ एप्रिल १६२७ (वैशाख शुद्ध तृतीया) ही एक जन्मतारीख मानली जात होती. महाराष्ट्र शासनाने शिवाजी महाराजांच्या जन्माच्या (शिवजयंती) स्मरणार्थ १९ फेब्रुवारी हा दिवस सुटी म्हणून सुचीबद्ध केला.

शिवाजी महाराजांचे नाव शिवाई या देवतेवरून ठेवण्यात आले. एका आख्यायिकेनुसार शिवनेरी गडावरील शिवाई देवीला जिजाबाईंनी आपल्याला बलवान पूत्र व्हावा अशी प्रार्थना केली होती. म्हणून या मुलाचे नाव शिवाजी ठेवण्यात आले होते. शिवरायांचे वडील शहाजीराजे भोसले हे मराठी सेनापती होते, ज्यांनी दख्खनच्या सल्तनतची सेवा केली होती. त्यांच्या आई जिजाबाई होत्या, ज्या सिंदखेडच्या लखुजीराव जाधवांच्या कन्या होत्या. जाधव हे देवगिरीचया यादव राजघराण्यातील वंशाचे होते.

शिवाजी महाराजांच्या जन्माच्या वेळी दख्खनमधील राजसत्ता विजापूर, अहमदनगर, गोवळकोंडा या तीन इस्लामी सल्तनतीमध्ये विभागली होती. शहाजीरावांनी आपली निष्ठा वेळोवेळी अमदनगरचा निजामशाही, विजापुरची आदिलशाही आणि मुघल यांच्या दरम्यान बदलली, पण त्यांनी पुणे ही नेहमीच आपली जहागिरी ठेवली व स्वतःची एक लहानशी फौज पदरी बाळगली.

छत्रपती शिवाजी महाराज हे मराठा जातीतील आणि भोसले कुळातील होते. त्यांचे आजोबा मालोजीराजे अहमदनगर सल्तनतचे एक प्रभावशाली सेनापती होते आणि त्यांना राजा ही उपाधी देण्यात आली होती. लष्करी खर्चासाठी त्यांना इंद्रापूरचे देशमुखी हक्क देण्यात आले. त्यांना त्यांच्या कुटुंबीयांच्या वास्तव्यासाठी शिवनेरी किल्ला देखील देण्यात आला होता.

विजापूर सल्तनतशी संघर्ष :

इ.स.१६४६ मध्ये सुलतानच्या आजारपणामुळे विजापूर दरबारात निर्माण झालेल्या गोंधळाचा फायदा घेऊन १६ व्या वर्षी शिवरायांनी तोरणा किल्ला जिंकला. आणि तेथे सापडलेला मोठा खनिज साठा आपल्या ताब्यात घेतला. पुढील दोन वर्षात शिवराजांनी अनेक पुण्याजवळील महत्त्वाचे किल्ले घेतले. यामध्ये पुरंदर, कोंढाणा आणि चाळण यांचा समावेश आहे. तोरण गडासमोरील मुरुबदेवांचा डोंगर जिंकून त्याची डागडुजी केली व त्याचे नाव राजगड ठेवले. राजगड ही एक दशकाकडून अधिक काळ त्यांची राजधानी होती. त्यानंतर शिवाजी महाराज हे कोकणाकडे वळले. त्यांनी महाराष्ट्राबरोबरच कर्नाटकमध्ये सुद्धा आपले साम्राज्य निर्माण केले.

मुघल साम्राज्याशी संघर्ष :

१६५७ मध्ये शिवाजी महाराजांनी मुघल साम्राज्याशी शांततापूर्ण संबंध ठेवले होते. मुघल सम्राटाचा मुलगा औरंगजेब जेव्हा दख्खनचा सुभेदार होता, तेव्हा त्याला विजापूर जिंकण्यासाठी शिवाजी महाराजांनी आपली मदत देऊ केली होती. याच्या बदल्यात शिवरायांच्या ताब्यातील विजापुरी किल्ले आणि गावावर त्यांचा हक्क मान्य करावा, अशी त्यांची इच्छा होती. मुघलांच्या प्रतिसादाने समाधानी झाले नसल्याने आणि विजापूरकडून चांगली ऑफर मिळाल्याने त्यांनी मुघलांच्या दख्खनवर हल्ला केला. मुघलांशी शिवाजी महाराजांचा संघर्ष मार्च १६५७ मध्ये सुरू झाला. जेव्हा त्यांच्या दोन अधिकाऱ्यांनी अहमदनगरजवळील मुघल प्रदेशावर छापा टाकला, यानंतर जुन्नरवर छापे टाकण्यात आले. यामध्ये शिवाजी महाराजांनी ३,००,००० एवढी रोख रक्कम आणि २०० घोडे घेतले. औरंगजेबने नासिरी खानला पाठवून याचे उत्तर दिले. नासिरी खानने अहमदनगर येथे मराठी सैन्याचा पराभव केला. तथापि पावसाळ्यामुळे आणि सम्राट शाहजहानच्या आजारपणानंतर मुघल सिंहासनासाठी भावासोबतच्या उत्तराधिकारासाठी लढाईमुळे औरंगजेबाला शिवरायाविरूद्धच्या प्रतिकारामध्ये व्यत्यय आला.

शाहिस्तेखान प्रकरण :

आता मुघल सम्राट झालेल्या औरंगजेबाने बिजापूरच्या बडी बेगमच्या विनंतीवरून जानेवारी १६६० मध्ये त्याचा मामा शाहिस्तेखान याला शिवाजी महाराजांवर हल्ला करण्यासाठी १५०,००० हून अधिक सैन्यासह शक्तीशाली तोफखाना घेऊन पाठविले. खानासोबत सिद्दी जोहरच्या नेतृत्वाखाली विजापूरचे सैन्य देखील होते. शाहिसतेखानाला आपल्या जवळपास ८० हजार इतक्या सुसज्ज सैन्यासह पुणे ताब्यात घेतले. त्याने जवळचा चाकण किल्लाही ताब्यात घेतला. किल्ल्याच्या भिंतीला तडे जाण्यापूर्वी दीड महिना त्याला वेढा घतला होता. शाहिस्तेखानाने मोठे चांगल्या तरतुदीचे आणि जोरदार सशस्त्र मुगल सैन्याचा फायदा घेऊन काही मराठा प्रदेशात घुसखोरी केली. त्याने पुणे शहरही ताब्यात घेतले आणि लाल महालातील शिवाजी महाराजांच्या राजवाड्याला आपले निवासस्थान बनवले.

५ एप्रिल १६६३ च्या रात्री शिवरायांनी

शाहिस्तेखानाच्या छावणीवर रात्रीचा धाडसी हल्ला केला. लाल महालाजवळून जाणाऱ्या एका लग्नाच्या मिरवणुकीचा आधार घेऊन ४०० माणसांसह शिवाजी महाराज लाल महालात घुसले. महालाचा कानाकोपरा माहिती असल्या कारणाने लवकरच विशाजी महाराज प्रत्यक्ष शाहिस्तेखानाच्या शयनगृहात घुसले. तोपर्यंत महालात कोठेतरी झटाझट सुरू झाल्याने खानाला जाग आली. आणि शिवाजी राजांना समोर पाहून खानाने जीव वाचविण्यासाठी सरळ खिडकीतून खाली उडी घेतली. शिवाजी महाराजांनी चपळाईने केलेला वार हुकल्यामुळे खानाच्या प्राणावर बेतण्याऐवजी त्याची तीन बोटे कापली गेली. या हल्ल्यात शाहिस्तेखानाला मुलगा त्याचे नोकर आणि सैनिक मारले गेले. खानाने पुण्याच्या बाहेर मुघल सैन्याचा आश्रय घेतला. या लाजीरवाण्या पराभवाची शिक्षा म्हणून औरंगजेबाने शाहिस्तेखानाची बंगालमध्ये बदली केली.

शाहिस्तेखानाच्या हल्ल्याचा बदला म्हणून आणि आपला आता कमी झालेला खजिना पाहून भरून काढण्यासाठी १६६४ मध्ये शिवाजी महाराजांनी सुरत हे बंदर शहर आणि श्रीमंत मुघल व्यापारी केंद्र लुटले.

राज्याभिषेक :

शिवाजी महाराजांनी आपल्या अनेक मोहिमेद्वारे मोठ्या प्रमाणावर जमीन आणि संपत्ती मिळवली होती. परंतु औपचारिक पदवी नसल्यामुळे तांत्रिकदृष्ट्या ते मुघल जमीनदार किंवा विजापुरी जहागीरदाराचे पूत्रे होते. ज्याला त्याच्या वास्तविक प्रदेशावर राज्य करण्यासाठी कोणताही कायदेशीर आधार नसतो. प्रस्तावित राज्याभिषेकाची तयारी १६७३ मध्ये सुरू झाली. तथापि काही वादग्रस्त समस्यामुळे राज्याभिषेकाला जवळपास एक वर्ष उशीर झाला. शिवाजी राजाच्या दरबारातील ब्राह्मणांमध्ये वाद निर्माण झाला. त्यांनी शिवरायांना राजा म्हणून राज्याभिषेक करण्यास नकार दिला. कारण हा दर्जा हिंदू समाजातील क्षत्रिय वर्णासाठी राखीव होता. शिवराय हे शेती करणाऱ्या गावाच्या प्रामुख्याने वंशातून आले होते. त्यानुसार ब्राह्मणांनी त्यांना शुद्र वर्णाने म्हणून वर्गीकृत केले.

६ जून १६७४ रोजी रायगड किल्ल्यावर एका भव्य समारंभात शिवाजी महाराजांचा मराठा साम्राज्याचे राजे म्हणून राज्याभिषेक झाला. गागा भट्ट यांनी यमुना, सिंधु, गंगा, गोदावरी, नर्मदा, कृष्णा आणि कावेरी या पवित्र नद्यांच्या पाण्याने भरलेल्या सोन्याच्या पात्रातून शिवाजी महाराजांच्या डोक्यावर पाणी ओतले आणि वैदिक राज्याभिशेक मंत्राचा उच्चार केला. प्रसवल्यानंतर शिवाजी राजांनी आई जिजाबाईंना नतमस्तक करून त्यांच्या चरणाचा स्पर्श केला. सोहळ्यासाठी रायगडावर जवळपास ५० हजार लोक जमले होते. शिवाजी महारजांना शककर्ता आणि छत्रपती असे नाव देण्यात आले. त्यांनी हिंदवी धर्मोद्धारक ही पदवी देखील घेतली.

■

पुण्यवंत, नितीवंत, जाणता राजा

– वैभव रामा मांडवकर
बी.ए.तृतीय वर्ष

यशवंत, कीर्तिवंत, सामर्थ्यवंत, वरदवंत, पुण्यवंत, नितीवंत, जाणता राजा...

छत्रपती शिवाजी महाराजांचे जीवनच एवढे भव्य आहे की ज्याचे जेवढे अवलोकन करावे तेवढे थोडेच. ते एकाच वेळी द्रष्टे, स्वातंत्र्ययोद्धे, सेनापती, संघटक, स्फूर्तिदाते, युगपुरुषोत्तम होते. त्यांच्या कुठल्याही गुणाला त्यांच्या काळातच नव्हे तर आताच्याही कित्येक शतकांत तोड नाही. असा हा राजा केवळ पुण्यवंत राजाच नव्हता तर तो आदर्श नितीवंत राजा होता.

निश्चयाचा महामेरू, बहुत जनांसी आधारू, अखंड स्थितीचा निर्धारू, श्रीमंत योगी...

असा साक्षपूर्ण शब्दांत या जाणत्या राजाचे वर्णन समर्थांनी केले आहे. शिवाजी महाराज श्रीमंत तर होतेच, पण योगीही होते. दक्षता, कणखरता, आणि तत्परता असा स्थायीभाव असलेल्या शिवछत्रपतींच्या शब्दकोशात आळस नव्हता, उत्साह होता, चंचलता नव्हती, निग्रह होता, मोह नव्हता, ममता होती, भोगवाद नव्हता, लागवाद होता. अष्टपैलू, अष्टवधानजागृत, आदर्श राज्यकर्ता, थोर सेनानी, लोकहितदक्ष, धर्माभिमानी, पण परधर्मसहिष्णू, चारित्र्यसंपन्न असा हा जाणता राजा होता. जगातील थोर पराक्रमी आणि मुत्सद्दी राजांची यादी जर समोर धरली तर छत्रपती शिवाजी महाराजांनी बरोबरी करणारा मोहरा सापडणे दुर्मिळ आहे. नेपोलियन बोपार्ट, ज्युलीयस, सिकंदर किंवा दुसरे कोणतेही नृपती उदाहरणार्थ घेतले तरी प्रत्येक नृपतीपेक्षा छत्रपती शिवाजी महाराज कांकणभर अधिक आहेत. आणि हे शत प्रतिशत कबुल करावेच लागते. छत्रपती शिवाजी महाराज आपले आहेत म्हणून त्यांना श्रेष्ठ ठरवायचे नसून ते एक ऐतिहासिक सत्य आहे. सर्व नृपती मालिकेत छत्रपती शिवाजी महाराजांना अग्रस्थान मिळवण्याचे पहिले कारण असे आहे की त्यांची नितीमत्ता बलवत्तर होती. मोगल सत्तेने जिकडे तिकडे आपला अंमल बसवला होता व स्त्रियांची अब्रु लुटण्याचा प्रसंग केव्हा येईल, याचा नेम नव्हता. अशा धामधुमीच्या काळात महाराजांचा जन्म झाला होता. राजांनी हे चित्र स्वराज्यात संपूर्ण बदलून टाकले होते.

महाराजांच्या गनिमी काव्याचा तंत्राचा आत्मा होता. वेग, तुफान वेग आणि त्यात हत्ती आणि त्यांची संथ गती बसत नव्हती. म्हणून महारजांनी

युद्धात हत्ती वापरले नाहीत. सर्व आलमदुनिया त्यावेळी हत्ती हे प्रमुख साधन वापरत असताना महाराजांनी नवीन वाट चोखाळली आणि हत्ती हा प्राणी आणि त्याच्या चाली महाराजांनी गनिमी कावा या युद्ध पद्धतीतून वगळून टाकल्या. हेच ते महाराजांचे वेगळेपण. जे जगाने केले ते महाराजांनी कधीच केले नाही. अन् जे महाराजांनी केले, ते जगाला कधीच करता आले नाही. म्हणून जगाला महाराजांसमोर कायम वाकावे लागते.

महाराजांचे जीवन हेच मुळी साहस, रणकौशल्य आणि राजकारणपटूंना त्यांच्या त्रिवेणी संगमावर उभे राहिले होते. छत्रसालासारख्या तरुणाने महाराजांचा आदर्श घेऊन दूरवरती बुंदेलखंडात राज्याची उभारणी केली होती.

सर यदुनाथ सरकारांच्या मते, हषकवर्ग (हुणबी) शिवाजी महाराजांच्या लष्कराच्या पाठीचा कणा होता. लष्करात कुणबी, मराठे, ब्राह्मण, प्रभू, शेणवी, मुसलमान, न्हावी, महार, कोळी, भंडारी, रामोशी, धनगर, आगरी वगैरे ५६ जातीचे लोक होते. शिवरायांचे सैन्य राष्ट्रीय होते. केवळ महाराष्ट्रातील नव्हे तर भारतातील सर्व जातीतील गुणवंतांना शिवरायांच्या सैन्यात प्रवेश मिळे. माणसांची पारख करूनच त्यांचा सैन्यात समावेश केला जाई. शिवराय सवडीच्या वेळी, सर्व सैनिकांची स्वतः व्यक्तिगत तपासणी करायचे. सैनिकांना नियमीत वेतन व कामगिरीनुसार बक्षीसे, बढत्याही देत. पण कडक शिस्त ठेवण्यासही ते विसरले नाहीत. त्यांनी निष्ठावंत सैनिक निर्माण केले. त्यांच्या सैन्यात, स्वराज्याचे कार्य अभिप्रेत होते. आपल्या स्वतःच्या राज्यासाठी आपण हे लढाईचे कार्य करीत आहोत, ही त्यांच्यात संभावना होती. त्यामुळे शिवरायांनी घालून दिलेल्या सवयी व आदर्श त्यांच्यात भिनलेले होते.

आज, महाराजांचे नाव वापरून राजकारण करणाऱ्यांची संख्या कमी नाही. सत्ता व मतांच्या राजकारणासाठी शिवाजी महाराज फक्त आमचेच आहेत, अशी जणू स्पर्धाच लागलेली असते. वाईट एकाच गोष्टीचे वाटते की, छत्रपतींच्या नावाचा जयघोष करणाऱ्यांचा महाराष्ट्र सुकाळ आहे, पण त्यांच्या विचारांना कृतीत आणणाऱ्या लोकांचा मात्र दुष्काळ आहे. आपण शिवचरित्र, महाराजांच्या गुणांना किती आत्मसात केले आहे, महाराज संपूर्णतः निव्यर्ससनी होते. आज आपले पुढारी, राज्यकर्ते निर्व्यसनी आहेत का, त्यांनी आखून दिलेली जीवनपद्धती, राबवलेली राज्यपद्धती, यांचा मात्र सपशेल विसर पडलेला आहे. ज्या शिवरायांनी महाराष्ट्रासाठी जीवनउर्जा समर्पित केली, त्यांचे जीवनचरित्र चौकटीत बंदिस्त करण्यापेक्षा त्यांच्या चरित्रावर प्राणप्रतिष्ठा करायला हवी. त्यांचे आचार-विचार अंगीकारणे हेच आपलयासाठी खऱ्या अर्थाने उत्सव ठरणार आहे.

कोणास कधी जहागिरी अगर जमिनी तोडून न देणारे, न्यायाच्या कामात कोणाची भिडभूर्वत न धरणारे, दुष्टांचा काळ, पण गरिबांचा कनवाळू, एकंदर रयतेस पोटच्या मुलाप्रमाणे वागवणारे, सदैव सावध व उद्योगी, नेहमी मातेच्या वचनात

राहून अहर्निश राष्ट्रांची चिंता वाहणारे, सवदेश, स्वभाषा व स्वधर्म या विविध संपत्तीचे संगोपन करणारे, पापभीरू परंतु रणशूर असे हे आधुनिक काळाचे अद्वितीय स्वराज्य संस्थापक, छत्रपती शिवाजी महाराज, पुण्यश्लोकांच्या पंक्तीस बसण्यास सर्वथईव पात्र आहेत.

शिवाजी महाराजांच्या नावाचा जयघोष मोठ्या अभिमानाने आपण करतो. त्यांच्या कर्तृत्वाचा आणि रोमांचित आठवणींचा जयजयकार करतो. जसा जसा शिवजयंती उत्सव जवळ येत असतो, तसतसे आपले डीपी बदलायला लागतात. शिवजयंतीचा दिवस मावळायला लागतो आणि मगे मात्र अंधार उरतो.

उत्सवी सोहळे साजरी करण्यापुरतेच शिवरायांना आपण सीमीत ठेवणार आहोत का, याचा विचार करण्याची आता नितांत गरज आहे. कदाचित यातूनच आचार-विचारांचा उषःकाळ निर्माण होईल, हीच अपेक्षा.

■

वास्तविक शिवराय आणि आजचे शिवराय

झुंजार लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे यांच्या शब्दात,

‘‘प्रथम मायभुच्या चरणा,
छत्रपती शिवबा चरणा,
मी शतदा मुजरा करते.’’

शिवाजी महाराज एक अष्ठपैलू नेतृत्व होते. प्रथमतः महाराज हे आईचा एक उत्तम मुलगा होते. धर्मनिरपेक्ष राजा, समतावादी, उदात्मतवाद, मानवतावाद, आदर्श राज्यसाधना, ध्येयनिष्ठा, आरमाराचे जनक, एक अर्थतज्ञ, दूरदृष्टी व वैज्ञानिक दृष्टीकोन असलेले आणि महत्वाची गोष्ट म्हणजे छत्रपती शिवाजी महाराज स्त्रिया मिळवण्यासाठी नाहीतर, स्त्रियांना हक्क मिळविण्यासाठी लढणारे राजे होते. परस्त्रिला आईचा दर्जा देणारे राजे इतिहासात दिसतात. त्यामुळे त्यांच्यातील गुणांनी ते अष्टपैलू नेतृत्व असणारे राजे होते.

छत्रपती शिवाजी महाराज बळीराजाचे कैवारी–

आज महाराज जगातील तमाम मानव जातीचे प्रेरणास्थान, पण शोकांतिका अशी की शिवरायांच्या महाराष्ट्रात शिवरायांचा खरा इतिहास अजून समाजापर्यंत पोहचला नाही. मात्र गावोगाव शिवरायांची जयंती होते, घराघरात फोटो आहेत, लोक आमचं कुलदैवत शिवाजी राजे असे म्हणतात. आपल्या समाजात महाराजांना व इतर महापुरुषांना विभागुन टाकले. हे आमचे, हे तुमचे, हे त्यांचे वगैरे – वगैरे... अशी समजमतांतरे निर्माण करतात. या अगोदर त्या महापुरुषांना समजून घेणं अत्यंत महत्त्वाचं आणि या काळातील पिढीसाठी गरजेचं आहे.

शिवाजी महाराजांचं पुस्तक अजुन घराघरात गेलं नाही. त्यांना कोणी वाचलंच नाही, उगाच त्यांचे स्टेट्स भाणि इन्स्टाग्राम स्टोरी लाउन काय फायदा? शिवराय केवळ रिल्स् बनवण्याइतपतच मर्यादीत का? फक्त डीपी आणि घरात फोटो लावल्याने आणि गुलाल उधळून पांढरे वस्त्र व भगवी दस्ती, कपाळाला टिळा, हातात राजमुद्रेची अंगठी, गाडीला भगवा झंडा, कानात बान्नी, त्यांच्यासारखेच पायजोडे घालून, महाराजांसारखी दाढी राखून स्वतःला महाराजांचा मावळा म्हणत, रात्रभर जयंतीच्या नावाखाली नाचल्याने शिवराय कळतील का? ही जागृती होणे महत्त्वाचे आहे. महाराजांना डोक्यावर नाहीतर डोक्यात घेणे महत्वाचे आहे.

पेरणारांची लेकरं परनाराला विसरली त्यामुळे ती आजच्या भरकटलेल्या, मोबाईलसारखे व्यसन लागलेल्या पिढीला काय दिशा देणार? काही जणांचा समज महाराज फक्त मराठ्यांचा राजा, मुस्लीमांचा कर्दनकाळ, हिंदूचा राजा (धर्मापुरता मर्यादीत असलेला राजा) असा समज यांचा झालेला. यात शिकलेल्यांचाही दोष नाही. कारण त्यांनी शिवरायांचा खरा इतिहास वाचला नाही. तर त्यांनी फक्त शिवरायांवरील व्याख्याने ऐकली. व्याख्यांनामध्ये श्रोत्यांच्या टाळ्या व दाद मिळवण्यासाठी शिवराय मुसलमानांशी कसे लढले हे इतके रंगवून सांगितले जाते की, श्रोते प्रचंड टाळ्या वाजवतात. शिवरायांचा जयघोष करतात. पण शेतक-यांसाठी, कष्टकऱ्यांसाठी, तमाम बहुजनांसाठी शिवरायांनी प्रचंड काम केले होते. हे खूप कमी प्रमाणात सांगल्या जाते. शिवराय, शिवराय हे बहुजनांचे राजे होते हे आताची पिढी विसरते.

कारण हे, श्रोत्यांना ते भाषण कंटाळवाने आपल्या भाषेत बोअर होते. इतके आपले मेंदू बधीर झाले आहेत की थोडावेळ बिनाफोन घेता ऐकण्याची क्षमता आपण त्या आंतरजालाजवळ गहान केली आहे. त्यांना महाराजांची खरी ओळख, इतिहास कळवला पाहीजे जे त्याच्यापासून वंचित आहेत.

महाराजांची माहिती काही २ ओळीत माहित असणारे लोक दिसतात. किल्ले बांधले, आरमार उभे केले. स्वराज्य स्थापीत केले पण शिवरायांनी अठरा पगड जातीचा समाज 'मावळा' या शब्दाने एकत्र आणला. महिलांना अधिकार दिले. कष्टकऱ्यांसाठी, शेतकऱ्यांसाठी प्रचंड काम करून भोसलेशाही निर्माण न करता, रयतेचे राज्य, बळीराज्य निर्माण केले. पण अनेकांनी फक्त मराठयांचे राजे शिवराय असा लोकांचा समज करुन दिला. जसं आजची ज्वलंत परिस्थीती मराठा समाज आरक्षण.

कुळवाडीभूषण 'कुणबी' असा नामोल्लेख महात्मा फुलेंनी केला व शिवरायांचा खरा इतिहास समाजासमोर आणला हे समजते.

तत्कालीन काळात जनतेचा आणि राजाचा प्रत्यक्ष संबंध येत नव्हता. वतनदार आणि रयतेचे प्रत्यक्ष संबंध येत असे. वतनदारांकडून सर्वसामान्य माणसांचे शोषण होणे थांबवले व त्यांचा बंदोबस्त केला. छत्रपती शिवराय हे असे राजे होते की, त्यांचे आाणि प्रजेचे थेट संबंध होते. जनता वतनदाराला कंटाळलेली होती. आणि त्यापासून मुक्ती होताच त्यांना शिवराय व हे स्वराज्य जनतेला आपले वाटायला लागले. व ज्यावेळी सर्वसामान्य जनतेला स्वराज्य आपले वाटते. त्यावेळी ते बऱ्या अर्थाने लोकशाहीला सुरुवात होत असते.

शिवबा राजे असतानाही शेतकऱ्याच्या झोपडीत जाऊन व्यांच्या घोंगडीवर बसून कांदाभाकरी खाऊ लागले, व त्यांच दुःखण समजुन घेऊ लागले व उपाययोजना करू लागले. त्यांच्या सुख-दुःखात सहभागी होऊ लागले. नाहीतर आजची परिस्थीती त्याउलट

शेतकऱ्यांच्या मालाला हमीभाव नाही. जगाच्या पोशींद्याला कर्जबाजारी बनावं लागलंय. त्यांच दुःख समजायला राजकरणी लोक तयार नाहीत. व राजकारणी लोकांना केवळ राजकीय सत्तेचा मोह असल्याचा दिसतो. आंदोलन करूनही ७०० शेतकरी दिल्लीच्या आंदोलनात मरण पावलेत ही शोकांतीका आहे.

'गाव करील ते राव करील काय?' असे शेतकऱ्यांना सांगितले. कुठलं सुलतानी संकट आलं तर शेतकऱ्यांचे अन्नधान्य, चारा-पाणी लुटला जायचा. त्यात महिलांनाही शत्रु उचलून न्यायचा. या संकटातून तुम्हाला लढायची वेळ आली तर शिवरायांची फौज मदत करेन असे सांगले. सामान्य शेतकऱ्यास आत्मविश्वास निर्माण झाला. असा आत्मविश्वास निर्माण झालेल्या रयतेला जगात कोणीही पराभूत करू शकत नाही. हा इतिहास बाहे. यातुन आपल्याला आत्मविश्वास किती महत्त्वाची भूमीका निभावतो हे समजते.

एखादा शत्रू स्वराज्यावर चालून आला की, शेतकऱ्यांची कुणबीक मोडून निघत असे. त्याला ५-१० वर्ष सुधरायला लागत. पण शिवरायांनी असे नियोजन केले होते की, शेतकऱ्यांची कुणबीकही मोडाली नाही पाहीचे, लुटपुट झाली नाही पाहीजे. यातुन प्रत्येक गोष्टीत महाराजांनी दूरदृष्टी आपल्याला समजते.

छत्रपती शिवाजी महाराजांचा मानवतावादी दूरदृष्टींच्या धोरणामुळे त्यांच्या सैन्याचा स्वतःच्या रयतेला तर नाहीच, शत्रुच्या भागातील शेतकऱ्यालाही त्रास नव्हता. कारण शिवराय आपल्या सैन्याला वेळेवर चांगला पगार व भत्ते देत असत. सैन्याला आदेश देत, 'शेतक-यांच्या भाजीच्या देठालाही हात लावायचा नाही?' शेतकरी यामुळे उपाशी मरतील, सामान्य जनतेला वाटेल मोघलांच्या धाडीपेक्षा तुमची धाड अधिक झाली. हे योग्य नाही हे सैनिकांना पत्राद्वारे पाठवत. रयतेला त्रास देऊ नका. जे पाहिजे असेल ते बाजारात जाऊन भांडन न करता, चांगल्या भावात विकत घ्या. छावनीतील सैनिकांनी थोडे दुर्लक्ष केले तर कित्ती नुकसान होते व त्याची झळ त्या परिसरातील शेतकऱ्यांना कशी बसते. याचे सूक्ष्म निरीक्षण शिवरायांनी केले होते.

छत्रपती शिवाजी महाराज धर्मनिरपेक्ष राजे होते. त्यांनी जात-पात न बघता शस्त्र हातात घेण्याचा अधिकार नसणा-यांना शस्त्र दिले. प्रतिष्ठा दिली. त्यासोबतच एक महत्वाचे कार्य शिवरायांनी केले ते म्हणजे शेती नसणा-यांना शेती दिली. शेती नसणा-यांना शेती देणे याला त्याकाळी फार मोठा अर्थ होता.

कारण आज जसे देशाचे नागरिकत्व नसलेल्यांना मतदानाच्या, निवडणुकीला उभा राहण्याचा हक्क मिळत नाही, त्याला रेशनकार्ड मिळत नाही, नागरिकत्व म्हणून सर्व विशेष अधिकारांना तो वंचित होतो. तसेच शिवपूर्व काळात त्याला गावात शेती नाही, त्याला गावात कसलेच सामाजिक अथवा पंचायतीचे हक्क नव्हते. ते मिळाले.

अशा काळात शिवरायांनी जमीन नसणाऱ्यांना जमीन दिली व गावात त्यांना मानाचे सामाजीक स्थान मिळवून दिले. ज्यांना जमिनी मिळाल्या, सामाजीक स्थान मिळाले त्यांना किती आनंद झाला असेल, याचे वर्णन शब्दात करता येईल का?

'जावे त्यांच्या वंशा तेंव्हा कळे'

अशी ती अवस्था आहे.

एवढेच नाहीतर शेतकऱ्यांना बैल जोडे, शेतीचे अवजारे, बियाणे, पैसा दिला आणि सर्वात महत्वाचे दिलेले पैसे पहिल्याच वर्षी परत मागितले नाही, कारण शेतकऱ्याला पहिल्याच वर्षी कर्ज परत मागिताले तर तो खाणार काय? अन दुसऱ्या वर्षी पेरणार काय? त्यामुळे पहिल्या वर्षी कर्ज परत मागितालेच नाही, अन् दुसऱ्यावर्षी पीक पाहुन पैसे वसुल केले. कारण पिक कमी आले व कर्जाचा हप्ता परतफेड म्हणून जास्त घेतला तर त्या कुणब्याची कुणबीक मोडेल. व एका शेतकऱ्याची कुणबीक मोडली, तर त्याला पुन्हा कुणबीक उभी करणे अत्यंत कठीण आहे. याची जाणीव महाराजांना होती म्हणून महाराज पीक पाहुन कर्जाचा हप्ता घेण्याची आज्ञा करत.

अत्यंत महत्वाची गोष्ट सर्व जगाला आश्चर्य वाटावा असा शिवरायांचा निर्णय म्हणजे 'दुष्काळ पडला तर कर्ज सरसकट माफ' हा निर्णय या काळातही मला महत्वाचा वाटतो. नाहीतर याउलट शेतक-याच्या मालाला भाव नाही, पैसा नाही, कर्जबाजारी बनल्यामुळे नो आत्महत्या करतो. कुटुंबांचा, मुलाबाळांचा छायाछत्र हरवत आजही वर्तमानपत्रात दररोज किमान दोन तरी बातम्या शेतकयांच्या आत्महत्येची दिसून येते. ही शोकांतीका आहे. त्याकाळात शेतकऱ्यांना होती, त्यासाठीचा खर्च व कर्ज देणे लाणि दुष्काळामध्ये कर्ज माफ करणे हा निर्णय अत्यंत क्रांतिकारक आहे.

अजून एक महत्वाचा निर्णय महाराजांनी घेतला होता, तो म्हणजे शेतीवर खर्च करण्यासाठी शुभेदाराला सरकारी खजिन्यातुन परस्पर दोन लाख लारीपर्यंत खर्च करण्याचा अधिकार दिला होता. त्यामुळे शेतीसाठी सरकारी खजिन्यातून खर्चाची सोय करणारे शिवराय या पिढीला कळणे आवश्यक आहे.

याच काळात जमिनीचा शेतसारा वसुल करताना वतनदार नजरेने जमिनीचा अंदाज घेऊन शेतसारा ठरवत. जमीन मोजणी पद्धत अस्तित्वात नव्हती. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी एक अत्यंत महत्वाचे काम केले. शेतकऱ्यांच्या दृष्टीने ते अत्यंत क्रांतिकारक कार्य होते, ते म्हणजे स्वराज्यातील जमिनीची मोजणी केली. व काठी, तसू, विद्या, चावर अशी जमीनीची मोजणी पद्धत ठरवून जमीन मोजण्यासाठी अधिकारी नेमले. त्यामुळे शेतीच्या सीमा ठरवून शेतसारा निश्चीत करता येऊ लागला. यासोबतच जमिनीच्या प्रतीनुसार शेतसारा ठरवला गेला. त्यामुळे हलक्या दर्जाच्या जमिनी वहितीखाली आल्या.

जमीन मोजणी झाली, शेतकऱ्यांना मदत मिळाली, रात्री निवांत झोप घेता येऊ लागली. त्यामुळे शेतकरी आनंदात जगू लागला. त्याकाळी

महाराजांच्या राज्यात एकातरी शेतकऱ्याने आत्महत्या केल्याची बातमी एकीवात व वाचण्यातही नाही. तर याकाळी शेतकरी आत्महत्या दररोज करताना दिसतो.

स्वराज्यातील किल्यावर अन्नधान्याची कोठारे भरू लागली शत्रुने किल्याला कितीही दिवस वेढा दिला तरी किल्यातील अन्नधान्य संपन्याचा प्रश्नच नव्हता. शेतसाऱ्यातून जमा होणाऱ्या या उत्पन्नाचा उपयोग शिवरायांनी शेतकऱ्यांना मदत करण्यासाठी करत. शत्रुने एखाद्या परिसरात धुमाकूळ घालुन लूट केलीच तर त्या परिसरात हे अन्नधान्य वाटले जाई. थोडक्यात शेतसाऱ्यातून जमा होणारी संपत्ती, पैसा, अन्नधान्य पुन्हा रयतेच्या भल्यासाठी वापरणारे छत्रपती शिवाजी महाराज खऱ्या अर्थाने शेतकऱ्यांचेच राजे होते. हा आदर्श आजच्या राजकारणी लोकांना निवडणुकीच्यावेळी तरुणांसाठी धर्मांधतेचा शोध लावलेल्या राजकारणांनी घेणे व त्यासाठी जनतेपर्यंत खरे शिवचरित्रही जाणे आवश्यक आहे.

शिवरायांनी अफझलखान प्रकरणी प्रतापगड का निवडला त्याचे एक महत्वाचे कारण, ते म्हणजे आपल्या रयतेचे विशेषतः शेतकऱ्यांचे नुक्सान होऊ नये. म्हणून प्रतापगडाची निवड केली होती. अफझलखानाला जर प्रतापगडाकडे यायचे असेल तर वाईच्या प्रांतातुनच यावे लागणार होते व अफझलखान वाईचा जहागिरदार होता व त्याच्याच प्रांतातून फौजफारा घेऊन येताना त्याचे नुकसान होईल. रयतेचे नाही होणार ही दूरदृष्टी होती.

शिवरायांची शेतकऱ्यांसाठीची तळमळ था घटनेतुन दिसून येते. औरंगजेबाने चिडून शाहिस्तेखान व अफजलखानानंतर त्याच्या अत्यंत मुरब्बी, कुशसंघटक लढवय्या सरकार मिर्झा राजे जयसिंग याला दक्षिणेच्या मोहीमेवर पाठविले. मिर्झाराजे जयसिंग अति जास्त सैन्यासह दक्षिणेला उतरला. स्वराज्यावर फार मोठे संकट आले. शिवरायांनी सर्व सरदारांना या संकटाचा मुकाबला करण्यास सज्ज राहण्याचे व शेतकऱ्यांना सुरक्षित स्थळी हालवण्याचे आदेश दिले. मिर्झाराजे जयसिंग अत्यंत अनुभवी सरदार होता, जर आपल्याला शत्रुशी लढायचे असेल तर आपण शत्रुच्या कमजोरी शोधले पाहीजे. ही त्याची खासियत, त्याचप्रमाणे जे आजपर्यंत कुणाच्याही लक्षात आले नव्हते, ती गोष्ट त्याच्या लक्षात आली.

'शिवरायांचा जीव किल्ल्यात नसून मावळ्यात आहे' शिवरायांना किल्यापेक्षा किल्ल्याच्या पायथ्याला असलेल्या शेतकऱ्यांची जास्त काळजी घेतात. ही बाब लक्षात घेऊन मिर्झाराजे जयसिंगाने स्वराज्यातील शेतकऱ्यांना, प्रजेला त्रास द्यायला सुरुवात केली, गावे जाळली, प्रजेवर अन्याय, अत्याचार, लूट होत याहे. अशा बातम्या शिवरायांच्या कानावर क्षणाक्षणाला जातील अशी कृती व बंदोबस्त मीर्झाराजे जयसिंगाने केला होता.

पुरंदर किल्ल्यास वेढा दिल्यानंतर त्याच्या लक्षात आले. एक पुरंदर किल्ला ताब्यात घेण्यास

इतका वेळ लागत असेल तर आपल्या उर्वरित आयुष्यात शिवरायांचे सर्व किल्ले आपण ताब्यात घेऊ शकत नाही. त्यामुळे रयतेला खुप त्रास दिला. त्यामुळे शिवरायांना तह करण्यास भाग पडले. हाच तो इ.स. १६६५ चा पुरंदरचा तह महाराजांनी केला, महाराजांनी तह केला, तो यासाठी आपले सैन्य व प्रजा सुरक्षित राहण्यासाठी. तह करणे म्हणजे हार नाही. यातून असं लक्षात येते की जिंकने महत्त्वाचे नाही, आयुष्यात, सुखानं, समाधानानं जगणं आणि जगू देणं महत्त्वाच आहे, हीच गोष्ट महाराजांचा तहबद्दलचा गुण आपण शेअर मार्केट गुंतवणूक संबंधित देखील आणला पाहीजे. शेअर मार्केट मध्ये गुंतवणुकदार भावनिकदृष्ट्या अडकतात. त्यांच्यासाठी अर्थात महत्त्वाचं आहे. पुरंदरच्या तहावरून महाराजांची शेतकऱ्यां--बद्दलची दुरदृष्टी आपणास दिसते. एक शत्रु खूप सैन्य घेऊन आला होता. प्रजेला त्रस्त करीत होता. व या परचक्रामुळे पेरण्या झाल्या नाहीतर शेतकरी वर्षभर काय खाणार? त्यामुळे हे संकट पावसाळ्याच्या आधी टळावे व शेतकऱ्यांच्या पेरण्या व्हाव्यात हा शिवरायाचा मुख्य हेतु होता.

महाराजांचा एवढा निःस्वार्थ दूरदृष्टी असलेले, समर्पन कार्य करणारे राजे यांच्यातला एक जरी गुण या पिढीने अंगीकारला तर आयुष्यात खूप काही करु शकतो.

''किल्ला गेला तरी हरकत नाही, मावळा गेला नाही पाहिजे?'' ही शिवरायांची मुख्य भुमीका होती. कारण गेलेले किल्ले परत मिळवीता येतात तर ते मिळवलेच. आग्र्याहुन परत येताच शिवरायांनी तहात दिलेले सर्व किल्ले परत मिळवीले होते. हा इतिहास आहे. रयतेसाठी किल्ले देणारे, आपला जीव धोक्यात घालणारे शेतकऱ्यांचे राजे शिवराय म्हणून आम्हाला माहीत होणे ही काळाची गरज आहे. पेरण्या वेळेवर झाल्या, प्रजा पुन्हा परकीय संकटाचा मुकाबला करण्यास सज्ज झाली. त्यातुनच वरून राजेशाही व आतून खऱ्या अर्थाने लोकशाही असलेले रयतेचे राज्य निर्माण झाले.

■

छत्रपती शिवाजी महाराज

– आझादे संध्या पिराजी
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

तेज तम अंश पर । कान्ह जिमि कंस पर,

त्यो म्लेंच्छ वंश पर । शेर शिवराज है,

शेर शिवराज है ।

सूर्य..... तसा दररोज पूर्वेला उगवतो, परंतु शेकडो वर्षांपूर्वी म्हणजेच यवनांच्या गुलामीच्या अंधारात तो उगवतच नव्हता. हा काळ मोगलाईचा आणि विशेष औरंगजेबाचा होता. त्यावेळी गंगा, यमुना अंधारातूनच चाचपडत वाहत होत्या. अन्याय आणि अपमान जनतेच्या आता अंगवळणी पडले होते. जगन्नाथ पंडितांसारख्या संस्कृत कवींनाही दिल्लीचा बादशाह जगदीश्वर वाटत होता. संघर्षाच्या काळात एक आशेचा किरण दक्षिणेत उगवला आणि स्वराज्याला सूर्य मिळाला. त्याच सूर्याचे दर्शन घेत 'कविराजभूषण' यांनी साकारलेले महाकाव्य आजही स्फूरण देत आहे. तो सूर्य म्हणजे 'छत्रपती शिवाजी महाराज'. महाराष्ट्रासह सबंध देशाचं लाडकं दैवत छत्रपती शिवाजी महाराज. छत्रपती शिवाजी महाराजांचा इतिहास जसा ढाल, तलवारी, लढाया, घनघोर संघर्षाचा आहे, तसाच तो समतेचा, प्रागतिक विचारांचा, महिलांच्या सन्मानाचा, धर्मनिरपेक्ष मूल्यांचा आणि शेतकरी व आदर्श कृषी धोरणाचा आहे. मी स्वतः शेतकरी कुटुंबातील असल्याने शेती आणि शेतकरी परिस्थितीची जाणीव होती. त्यामुळे आजच्या आधुनिक तंत्रज्ञानाच्या युगामध्ये प्रत्येत क्षेत्र वेगाने विकसित, अद्ययावत होत असतात. शेती आणि शेतकरी बांधवाच्या परिस्थितीमध्ये पाहिजे तशी सुधारणा होत नसल्याची खंत मनाला भेडसावत असते असं म्हणतात. जे इतिहासाला सोबत ठेवतात त्याच्या भविष्याची वाटचाल ही सुनिश्चित होत असते. आणि आजची हीच वाटचाल सुनिश्चित करण्यासाठी त्यासाठी छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या कृषी धोरणाला नव्याने आत्मसात करण्याची गरज भासत आहे.

आपली संस्कृती आणि आपला भारत देश हा शेतीप्रधान समजला जातो. कृषिप्रधान व्यवस्थेमध्ये शासन, प्रशासन आणि कृषी हे

समरुप असते. हे जगातील इतर देशांच्या कृषी विकासावरुन दिसून येते. स्वतःच्या हक्कासाठी शेतकऱ्यांना तब्बल अकरा महिने आंदोलन करावे लागले. यावरुन या व्यवस्थेमध्ये शेतकऱ्याची अवस्था किती बिकट आहे याची जाणीव होते. दरवर्षी राज्य व केंद्रशासानाचा अर्थसंकल्प सादर होत असतो. यामध्ये कृषिक्षेत्राला विकसीत करण्यावर भर दिला जातो. असे असतानाही शेतकऱ्यांनी अवस्था 'जैसे थे' दिसून येते. या परिस्थितीवर समाधान छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या कृषी धोरणातून सापडतात. त्यांचे ग्रामीण समाज व शेतीबाबतचे विचार आजही फारसे समोर आले नाहीत हे आमचे दुर्दैव. १६व्या शतकात छत्रपती शिवाजी महाराज हे एकमेव 'जाणते राजे' होते की त्यांच्या राज्यातील प्रजा सुखी होती, आनंदी होती. शेती हे केवळ उपजीविकेचे साधन नसून रयतेच्या उत्पन्नाचे स्त्रात आहे. ''शेती पिकली तर रयत सुखी, रयत सुखी तर राजा सुखी'' हे सूत्र महाराजांना समजले होते. त्यामुळे महाराजांचा शेतीकडे बघण्याचा दृष्टीकोन रयतेला मजबूती देणारा होता. म्हणूनच शिवाजी महाराज 'शेतकरी हितकर्ते राजे' होते.

स्वराज्यातील आणि परराज्यातीन शेतकऱ्यांना, पिकांना इजा पोचणार नाही, याची काळजी शिवरायांनी सदैव घेतली. शेतकऱ्यावर अन्याय, जुलूम, अत्याचार, जबरदस्ती करु नका. त्यांना प्रेमाने वागवा अशा सक्त सूचना शिवरायांनी दिल्या होत्या. महाराजांचे समकालीन महापुरुष संत तुकाराम अभंगात म्हणतात ''मठे साहू नियाकरती पेरणी'' यावरुन त्याकाळात शेतीला किती महत्त्व होते, हे लक्षात येते. रयतेच्या रक्षणासाठी घरातला एक मावळा जर कामी आला तर त्याचे मढे झाकून काळ्या आईची ओटी भरली पाहिजे अशी पद्धत होती. आजच्या तंत्रज्ञानाच्या युगामध्येसुद्धा शेतकऱ्यांनाच स्वतःच मढे होण्याची वेळ आली आहे. असो....

छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या राजवटीत स्वराज्यातील जमिनीची तीन वेळा मोजणी करण्यात आली. प्रथम सन १६३९ मध्ये दादोजी कोंडदेवाच्या वेळी नंतर १६४९ मध्ये मोरोपंत पिंगळे यांनी आणि शेवची शिवराज्याभिषेकानंतर मोरोपंत पिंगळे यांनी आणि सचिन अण्णाजी दत्तो यांनी १६७८ मध्ये स्वराज्यातील सर्व जमिनीची मोजणी करुन जमिनीची प्रत ठरवून जमीन महसूल प्रत्येक गावाचे जमिनीचे महसूलपत्रक तयार करुन घेतले. छत्रपतींच्या अश अनेक पत्रातून त्यांचे शेती आणि शेतकऱ्यांविषयीचे विचार स्पष्ट दिसतात. म्हणूनच संत रामदास स्वामी यांना शिवरायांच्या रुपाने जाणता राजा दिसतो, तर संत तुकाराम महाराज यांना शेतकऱ्यांचा कल्याण करणारा लोककल्याणकारी राजा नजरेस पडतो. महात्मा फुले यांना 'कूळवाडी भुषण' दिसतो. आज्ञा

पत्रातील आणखी एक दाखला मिळतो तो दाखला असा की, दिव्यातील ज्योत विझल्याशिवाय झोपी जाऊ नकोस, अन्यथा उंदीर दिव्यातील पेटती ज्योत पळवतील. कडब्याच्या गंजी पेट घेतील, गुरा-ढोरांना चारा मिळणार नाही. गुरे-ढोरे दुध देणार नाहीत. माझ्या रयतेची बालके दुधापासून वंचित राहतील. माझा भावी महाराष्ट्र दुबळा होईल, तरी दिव्यातील ज्योत विझल्याशिवाय झोपी जाऊ नकोस, यावरुन शिवरायांची प्रजा व शेतकऱ्यांबद्दल पालकांसारखी काळजी असल्याचे स्पष्ट होते. आपल्या राज्यातील रयत सुखी असेल तरच राजाही सुखी असेल, असा शिवरायांच्या राज्यकारभाराचा दस्तूर होता. कोणत्याही परिस्थितीत लष्कराने किंवा महसुली अधिकाऱ्याने शेतकऱ्याकडून धान्य, भाजीपाला फुकट घेऊ नये, असे त्यांचे सक्त आदेश होते.

शेतकऱ्यांविषयी त्यांची संवेदनशीलता पाहता २३ ऑक्टोबर १६६२ रोजी सर्जेराव जेधे यांना पाठविलेल्या पत्रात शिवाजी महाराज शेतकऱ्यांप्रती किती संवेदनशील, कनवाळू होते हे स्पष्ट होते. मोगलांचा सरदार शायिस्ताखान पुण्याच्या रोखाने येत होता. त्यामुळे शेतकऱ्यांना सुरक्षित ठिकाणी हलविण्याबाबत शिवाजी महाराज जेधे यांना सांगतात, ''मोगल तुमच्या भागात येत असल्याची बातमी हेरांनी आणली आहे, त्यामुळे गावोगावच्या लेकरा-बाळांसह सर्वांना सुरक्षित ठिकाणी पाठवा. या कामात हयगय करु नका, उशीर झाला तर रयतेला त्रास होईल, याचे पाप तुमच्या माथ्यावर बसेल. रात्रीचा दिवस करुन विनाविलंब शेतीवाडी करणाऱ्या सर्वांना जेथे आश्रय असेल तेथील डोंगरावर घेऊन जावा. सावध राहा.'' संकटसमयी शेतकऱ्यांना मदत करणे हे पुण्य आहे, अशी त्यांची भावना होती. शिवाजी महाराज यांची पाप-पुण्याची संकल्पना आध्यात्मिक पातळीवरची नव्हती तर ती नैतिक, व्यवहारवादी पातळीवरची होती.

छत्रपती शिवाजी महाराजांचे शेतीविषयक लक्ष विचारात घेण्याबरोबरच राज्याभिषेक सोहळ्याच्या प्रसंगाचा वेध घेणे आवश्यक आहे. महाराजांनी राज्याभिषेकासाठी ६ जून ही तारीखच का निवडली? ६ जून हा मृग नक्षत्राचा आदला दिवस. कृषी संस्कृतीशी जवळचा दिवस. देशात मृग नक्षत्र ७ जूनलाच सुरु होते. त्याच काहीच बदल नाही. महाराष्ट्रात कोकणासह सगळीकडे शेतकऱ्यांच्या पेरण्या मृग नक्षत्रात प्रामुख्याने होतात. बळी राजाला सोयीचे जावे व त्याचा एख आनंदाचा क्षण ठरावा म्हणून त्या काळी रोहिणी व मृग नक्षत्राचा जोडदिवस म्हणून ६ जून हा दिवस निवडला गेला. त्या काळी ६ जून १६७४ रोजी रायगडचे वातावरण निरभ्र होते. पाऊस नव्हता, शेतकऱ्यांना पण सोयीचे होते. याला म्हणतात स्वराज्य रयतेचा

राजा, जाणता राजा ।

हीच दृष्टी आजच्या कृषी धोरणाला अपेक्षित आहे. दरवर्षी अर्थसंकल्पामध्ये कृषी धोरणासाठी तरतूद करण्यात येते. यंदाही मार्च २०२२ राज्याच्या अर्थ संकल्पामध्ये कृषिक्षेत्रासाठी झुकतं माप देण्यात आलं आहे. सरकार कोणाचे असो, वेळोवेळी शेती आणि शेतकरी हिताचा निर्णय व त्यानुसार अंमलबजावणी करण्यात येत असते. मात्र, त्याचा शेतकऱ्यांना किती लाभ होतो हाच प्रश्न चिंतनाचा ठरतो. आजही नापिकी, आस्मानी संकट, कोरडवाहू शेती, गुंतवणुकीपेक्षा कमी उत्पादन या सर्व संकटामुळे शेतकऱ्यांसमोर आत्महत्येचा मार्ग शिल्लक राहतो. एकूणच आज कृषी तंत्रज्ञानाची व्याप्ती वाढत असताना कृषी धोरणाला शेती व शेतकरी हितानुसार लाभ देण्याची गरज आहे. त्यासाठी जे वैभव आपल्याला मिळाले आहे, त्याचा मागोवा घेत अंमलबजावणी करावी लागणार हेच शिवकालीन वैभवातून शिकायला मिळते.

महाराजांच्या काळात सेंद्रिय शेती केली जात असे. आज ती रासायनिक खतांच्या प्रभावाखाली आली आहे. त्या काळात शेतकरी आत्महत्या होत नसत. आज शेतकरी आत्महत्येचा विषय गहन झाला आहे. एकूणच आजचे शेतीचे अर्थकारण बिघडलेले आहे. महाराष्ट्रात हिंदवी स्वराज्याचे संस्थापक छत्रपती शिवाजी महाराज यांच्या नावाने शेतकऱ्यांना कर्जमाफी देण्यात आली आहे. ही कर्जमाफी तात्कालीन काळासाठी आधार देणारी असली तरी शाश्वत पर्याय असू शकत नाही. त्यामुळे ही दरी संपुष्टात आणण्यासाठी विदर्भ, मराठवाड्यात सिंचन क्षेत्र वाढले पाहिजे. शेतीमालास योग्य भाव मिळाला पाहिजे. पशुधन वाढविण्यासाठी प्रोत्साहन दिले पाहिजे. तरच खऱ्या अर्थाने छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या स्वप्नातला शेतकरी सुखी होईल.

■

छत्रपती शिवाजी महाराज

– **जमघाडे निवृत्ती महादजी**
बीकॉम फर्स्ट इयर

स्वतंत्र साम्राज्याचे स्वप्न साकार करणारे स्वराज्य संस्थापक श्री छत्रपती शिवाजीराजे भोसले हे एक थोर कर्तृत्ववान पुरुष होते. त्यांनी शून्यातून केलेली स्वराज्य निर्मिती ही सर्वांसाठी प्रेरणादायी आहे.

शिवाजी महाराज हे आदर्शवत स्वराज्य कारभार करण्यात यशस्वी ठरलेले महाराष्ट्राचे पहिले छत्रपती आहेत. शिवरायांचा जन्म फाल्गुन वैद्य तृतीया शके १५५१ या दिवशी म्हणजेच १९ फेब्रुवारी सोळाशे तीस शिवनेरीच्या नगारखान्यात सनई, चौघडा वाजत होता अशा मंगल क्षणी जिजाबाईंच्या पोटी पुत्र जन्मला. किल्ल्यावर आनंदी आनंद झाला. बाळाचे बारसे झाले. शिवनेरी किल्ल्यावर जन्म झाला म्हणून बाळाचे नाव शिवाजी ठेवले. जनता त्यांना शिवराय, शिवाजी महाराज, शिवबा राजे या नावाने ओळखते.

त्यांच्या वडिलांचे नाव शहाजी आणि आईचे नाव जिजाबाई होते. दादोजी कोंडदेव हे त्यांचे गुरु होते. शिवाजी महाराज हे मराठा साम्राज्याचे संस्थापक होते आणि त्यांना लहानपणी रामायण, महाभारताच्या गोष्टी सांगून त्यांच्यावर संस्कार घडविले. वयाच्या पंधराव्या वर्षी शिवाजी महाराजांनी रायरेश्वराच्या मंदिरात स्वराज्य निर्मितीची प्रतिज्ञा घेतली तेव्हा ते पुण्याला कारभार पाहत होते तेव्हा त्यांनी राजमुद्रा तयार केली.

प्रतिपश्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विष्णिता
शाह सुनो शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते.

म्हणजेच प्रतिपदेच्या चंद्रकलेप्रमाणे वाढत जाणारी आणि साऱ्या विश्वाला वंद्य होणारी अशी, शहाजीराजांचा पुत्र शिवाजी राजे यांची राजमुद्रा लोकांच्या कल्याणासाठी आहे असे सांगणारी ती राजमुद्रा म्हणजे स्वराज्याच्या स्थापनेचा संकेतच होय.

शिवरायांची घोडदौड सुरू झाली. बारा मावळातील किल्ल्यांमागून किल्ले त्यांनी ताब्यात घेतले. कोंढाणा आणि पुरंदर हे दोन किल्ले ही मोक्याचे होते. शिवरायांनी तेही युक्तीने काबीज केले. त्यानंतर रोहिडा ताब्यात घेतला. स्वराज्याची घोडदौड अशी जोरात सुरू झाली.

सुलतानशाही मुघल या क्रूर सत्तेला गाडून टाकून स्वराज्याचे तोरण त्यांनी उभारले. अफजलखानाचा वध, होता जीवा म्हणून वाचला शिवा! अशी म्हणत पुढे रूढ झाली. शिवरायांचा

शाहिस्तेखानावर हल्ला, शाहिस्तेखानाची फजिती, आग्र्यातून सुटका असे एक ना अनेक प्रसंग आहेत ज्यातून शिवाजी राजांनी यशाची पताका कायम ठेवली.

शिवाजी या नावात प्रचंड शक्ती आहे.

शि - शिव (महादेव)

वा - वाघ

जी - जीवनभर

जीवनभर वाघासारखे जगणारे. शिवाजी हे जनतेच्या हृदयामध्ये पाचशे वर्षानंतरही कायम आहेत. जनतेचा अभिमान स्वाभिमान म्हणजे शिवछत्रपती महाराज.

■

एक तेजस्वी सूर्य

– **आरती केशव इंगोले**
बीएससी थर्ड इयर

जेव्हा करपून निघाली धरणी यवनांच्या ज्वालाखाली विकून टाकली अब्रू स्वधर्माच्या चितेखाली

एक तेजस्वी सूर्य उगवला महाराष्ट्राच्या क्षितिजावरी जातो गाणं तयाचे आम्ही स्मरण शिवछत्रपतींचे करुनी

छत्रपती शिवाजी महाराज म्हणजे विश्वबंधुत्व, विश्व कल्याण प्रत्यक्षात उतरवणारा राजा, लोककल्याण हेच अंतिम ध्येय असणारा कृतिशील राजा. तब्बल ३७० वर्षांपूर्वी याच भूमीला पडलेलं जनकल्याणाचं सुंदर स्वप्न म्हणजे स्वराज्य आणि हेच स्वप्न सत्यात उतरवणारे युगपुरुष अर्थात छत्रपती शिवाजी महाराज.

छत्रपती शिवाजी महाराजांचे कृषी धोरण हे खऱ्या अर्थाने त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचा एक महत्त्वाचा पैलू आहे. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी सतराव्या शतकामध्ये स्वराज्याची जास्तीत जास्त जमीन ही लागवडीखाली आणण्याचं काम केलं. शेतकऱ्यांना मोफत बी बियाणे देऊन त्या माध्यमातून स्वराज्यातील शेती स्वयंपूर्ण करण्याचं काम केलं. त्यांच्या आधी कुठल्याच राजाने स्वतःच्या राज्यामध्ये शेतीचे मोजमाप केल्याचं पहायला मिळत नाही. एवढा मोठा राजा आपल्या मातीमध्ये होऊन गेला. आमच्या स्वराज्यामध्ये शेतसारा देऊन सुद्धा एकाही शेतकऱ्याने आत्महत्या केल्याचा दाखला पाहायला मिळत नाही. पण २४ व्या शतकामध्ये जर मराठवाड्यात शेतकऱ्यांवरती आत्महत्येची वेळ येत असेल तर खऱ्या अर्थाने कृषीप्रधानतेचा डंका वाजवणाऱ्या आणि शेती बद्दल निरुत्साही असणाऱ्या इथल्या बेजबाबदार सरकारने जसे चित्ते संपुष्टात आले म्हणून ते बाहेर देशातून मागवले पण आपल्या बेजबाबदारपणामुळे उद्या जर या देशातून एक एक तरुण आत्महत्या करून शेतकरी नावाची जमातच संपुष्टात आली तर ती सुद्धा अशीच बाहेर देशातून आयात करणार आहात का?

छत्रपती शिवाजी महाराजांनी सतराव्या शतकामध्ये ०% शेतकऱ्यांना कर्ज देण्याचे काम केलं होतं. या पलीकडे जाऊन गावोगावांमध्ये विहीर, तलावांची बांधणी करण्याचं काम केलं. पण आज आमच्या देशामध्ये मात्र शेतकऱ्यांवरती जाचक कृषी कायदे लादले जातात. त्यांनी विरोध केला म्हणून त्यांच्यावर लाठीचार केला जातो.

स्वतःचे भ्रष्टाचार लपवण्यासाठी खेकड्यांवरती धरण फोडीचे आरोप लावले जातात. या देशात फक्त नावापूर्ती बुजगावण्यासारखे उभी असणारे कृषी विद्यापीठ तिथल्या कृषी विद्यापीठांच्या पुस्तकांमध्ये कितपत पडलेली कृषी विकासाची संकल्पना, शेतकऱ्यांच्या बांधापर्यंत कधीच न आलेल्या इथल्या सरकारी योजना आणि बाभळीला लटकलेला कृषी प्रधान भारत हे वास्तव जर आपण नाकारू शकत नसू तर आजच्या प्रशासन व्यवस्थेसमोर शिवरायांचे कृषी धोरण हे मला खऱ्या अर्थाने आदर्श वाटायला लागतात.

■

छत्रपती शिवाजी महाराज

– काकडे पौर्णिमा अशोक
बीकॉम तृतीय वर्ष

शिवाजी महाराज महाराष्ट्राचे युगपुरुष होते. महाराष्ट्रात स्वातंत्र्याची ज्योत पेटवून हिंदवी स्वराज्याची स्थापना करणारे शिवाजी महाराज आपल्या सर्वांनाच माहिती आहेत. शिवाजी महाराजांचा आपल्या भारत भूमीला नेहमीच अभिमान वाटावा असे ते भारताचे दैवत आहेत. अशा या महापुरुषाचा जन्म १९ फेब्रुवारी १६३० रोजी शिवनेरी किल्ल्यावर झाला. त्यांच्या वडिलांचे नाव शहाजीराजे भोसले आणि आईचे नाव जिजाबाई होते. शहाजीराजे भोसले विजापूर दरबारात सरदार होते. शहाजीराजे भोसले विजापूर दरबारात असतानाच जिजाबाईंनी शिवाजी महाराजांना पुण्यापासून जवळच असलेल्या शिवनेरी किल्ल्यावर जन्म दिला. लहानपणापासूनच जिजाबाईंनी त्यांच्या मनात हिंदवी स्वराज्याचे स्वप्न रुजवले.

बालपणी जिजाबाईंनी शिवरायांना शूरवीर महापुरुषांच्या व संतांच्या गोष्टी सांगून त्यांचे बालपण शूर केले. दादोजी कोंडदेव हे शिवरायांचे गुरु होते. त्यांनी लहानग्या शिवबास लष्करी शिक्षण दिले. तलवार चालविणे, भाला फेक, दांडपट्टा खेळणे, घोड्यावर रपेट यांसारख्या सर्व शिक्षणात शिवबा तरबेज होते. मराठी माणसात पराक्रम असूनही तो गुलामगिरीत का राहतो हा विचार अगदी लहानपणापासूनच शिवबाच्या मनात घोळत असे. लहानपणीच शिवबांनी मावळ्यांना गोळा करून त्यांचे नेतृत्व केले होते. त्यांना हिंदवी स्वराज्य स्थापनेचा विचार सांगितल्यामुळे ह्याच मावळ्यांनी पुढे हिंदवी स्वराज्य स्थापनेसाठी शिवरायांना साथ दिली. शिवरायांचे युद्धाचे धडे पूर्ण होतात थोड्याच दिवसात शिवरायांनी व या शूरवीरांनी आपल्या जीवाची परवा न करता शिवरायांसाठी आपल्या प्राणांचे बलिदान दिले. शिवरायांनी अनेकांना टक्कर देऊन अनेक किल्ले त्यांनी ताब्यात घेतले, जिंकले. रायगड, प्रतापगड, पन्हाळा यांसारखे अनेक किल्ले त्यांनी ताब्यात घेतले. अफजलखानाचा वध व शाहिस्ताखानासारख्यांची फजिती गनिमी काव्याने व धाडसाने केली.

शिवरायां जवळ प्रचंड धाडस, आत्मविश्वास, गनिमी कावा आणि प्रसंगावधान असल्यामुळे प्रत्येक वेळी त्यांचा विजय झाला. औरंगजेबाने त्यांना कैदेत टाकतात अतिशय

चालाखीने व प्रसंगावधानाने त्यांनी आपली आग्र्याहून सुटका केली. शिवाजी महाराजांना अन्यायाची चीड होती. ते धर्म, जातीभेद मानत नसत. गुणी व शूर माणसाची त्यांना पारख होती. गोब्राह्मण, प्रतिपालक राजा म्हणून त्यांची ख्याती होती. शिवाजी महाराजांनी हिंदवी स्वराज्य स्थापन करून आदर्श राज्य कसे असावे व आदर्श राजा कसा असावा हे दाखवून दिले. शिवाजी महाराज हे भारतातील महान राजा होते आणि तसेच मराठा साम्राज्याचे संस्थापक होते.

ते एक अत्यंत निर्भीड राजा होते. ज्यांनी मोगलांच्या विरुद्ध भारताचा अभिमान राखला. छत्रपती शिवाजी महाराज रामायण व महाभारत अत्यंत सावधगिरीने करत असत. दरवर्षी १९ फेब्रुवारी हा दिवस छत्रपती शिवाजी महाराज यांची जयंती म्हणून संपूर्ण जगात मोठ्या उत्साहात साजरा केला जातो. भारतातील प्रत्येक शाळा, महाविद्यालय किंवा कार्यालय सर्वत्र हा दिवस मोठ्या उत्साहात साजरा करतात. या दिवशी भाषण, निबंध, रांगोळी इत्यादी स्पर्धांचे आयोजन केले जाते.

छत्रपती शिवाजी महाराज एक उत्साही देशभक्त होते. त्यांनी परदेशी आक्रमण कर्त्यांविरुद्ध शस्त्रे घेऊन भारत मातेला त्यांच्यापासून मुक्त करण्याचे वचन दिले. आपल्या तीव्र इच्छाशक्ती आणि भक्कम देशभक्ती मुळे ते महानतेच्या शिखरावर पोहोचू शकले.

शिवाजी या नावात प्रचंड शक्ती आहे.

शि- शिव (महादेव)

वा- वाघ

जी- जीवनभर

जीवनभर वाघासारखे जगणारे शिवाजी हे जनतेच्या हृदयामध्ये पाचशे वर्षानंतरही कायम आहेत.

शिवरायांची राजमुद्रा-

प्रतिपश्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्वंदिता
शाह सुनो शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते!

प्रतिपदेच्या चंद्रकलेप्रमाणे वाढत जाणारी आणि साऱ्या विश्वाला वंद्य होणारे अशी शहाजीराजांचा पुत्र शिवाजी राजे यांची राजमुद्रा लोकांच्या कल्याणासाठी आहे.

■

छत्रपती शिवाजी महाराज यांचा ३५० वा राज्याभिषेक सोहळा

– अनिकेत बालाजी सोनटक्के
बीए तृतीय वर्ष

स्वराज्य स्वतःच राज्य. निजामांच्या छाताडावर उभे राहून उभारलेलं राज्य अर्थात स्वराज्य. माँसाहेब आणि आबासाहेब यांच्या स्वप्नांची शौर्यगाथा म्हणजे स्वराज्य. माजलेल्या यवनांचा चिथडा उडवायचा असेल तर एकच मार्ग आहे तो म्हणजे स्वराज्य. माता भगिनींची अब्रू राखायची असेल, धार्मिक स्थळांना सुरक्षित ठेवायचा असेल तर स्वराज्य उभा करावंच लागेल. जिजाऊ यांचा विचार म्हणजे स्वराज्य. जिजाऊ या दूरदृष्टी कोण ठेवत. जिजाऊ लहानपणापासून माजलेल्या मुघलांचा थैमान बघत आलेल्या. या माजलेल्या गिधाडांना कापायचा असेल तर फक्त एकच उपाय ते म्हणजे मराठी रयतेचं साम्राज्य अर्थात स्वराज्य.

अखंड हिंदुस्थानाचे आराध्य दैवत छत्रपती शिवाजी महाराज. आपल्या आईच्या डोळ्यात दिवस-रात्र विस्तवा समान तळपत राहणारे स्वप्न अर्थात स्वराज्य. या हिंदवी स्वराज्याचा पाया घालावा कसा योग्य तिथी, दिवस, सण काही न पाहता रायरेश्वराच्या पिंडीवर करंगळी कापून त्या शिवलिंगाला रक्ताभिषेक घालून स्वराज्याची शपथ घेतली आणि खेळण्या- बागडण्याच्या वयात शिवबा स्वराज्याच्या कल्पवृक्षाला वाढवीत होते. माणसं जमा केली, तरुण सवंगड्यांनासोबत जेष्ठ सरदारांच्या विचारांना सुद्धा अग्रगण्य मानले.

शिवरायांनी स्वराज्याच्या या संकल्पनेला सातत्यात उतरवले. शिवराय हे प्रजाहितदक्ष राजा होते. स्वराज्यामध्ये जातीभेदाला, वर्णभेदाला स्थान नव्हते. स्वराज्य हे कुण्या एकाचे नसून ते अठरापगड जातीचे होय. छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या स्वराज्यामध्ये शेती हे केवळ उपजीविकेचे साधन नसून रयतेच्या उत्पन्नाचे स्रोत आहे. शेती पिकली तर रयत सुखी अन्? रयत सुखी तर राजा सुखी हे सूत्र शिवरायांचे होते. त्यामुळे शिवरायांचा कृषी विषयक दृष्टिकोन रयतेच्या लाभाला कारणीभूत होता.

शक्तीपेक्षा युक्ती वाद श्रेष्ठ मानला. जेवण कापायचा नाही तर मुळातून कसा उपटायचा याचा सखोल अभ्यास शिवरायांना होता. आपल्या वयाच्या तरुणांना सोबत घेऊन राजांनी आपली फौज तयार केली. अफजलखाना सारख्या धिप्पाड हैवान आला धुळीस मिळविणे सोपे नव्हते पण आपल्या युक्तीवादातून, सक्षम नियोजनातून तसेच साथीदारांच्या भक्कम

सहाय्यामुळे महाराजांनी अफजलखानाला त्याच्याच छावणीत जाऊन फाडला.

शिवरायांच्या युक्तिवादाचे पुन्हा- पुन्हा दर्शन झाले. पन्हाळा वेढा, सुरतची लूट, पुरंदरचा तह, आग्रा भेट तिथून सुरक्षित सुटका यामध्ये शिवरायांचा युक्तिवाद हा बघायला भेटला. परकीय आक्रमकांना योग्य पद्धतीने धूळ चारली त्या काळात एका सरदारांच्या मुलाने संपूर्ण परकीय आक्रमकांना तोंडावर पाडणे ही काही साधी बाब नव्हती. मुघल असो की इंग्रज मराठ्यांना चार हात लांबूनच सलाम ठोकायचे.

छत्रपती शिवाजी महाराज हिंदवी साम्राज्याचे राजे होते. यात तीळ मात्र ही शंका नाही पण तत्वतः त्यांचे स्थान राजा किंवा सम्राट समान नव्हते. कारण ते अभिषेक राजा नव्हते. शिवरायांचा विजय हा वाखाणण्याजोगा होता. त्यांचे नौदल भक्कम असले तरीही ते मुघलांचे जमीनदार होते.

त्याकाळची व्यवस्था पाहता शिवराय अभिषिक्त सम्राट नसूनही त्यांनी या स्वराज्याचे राजा होते पण या रयतेच्या राजाला अभिषिक्त सम्राट व्हावे लागले. पण ते सुद्धा सहज शक्य नव्हते कारण प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथानुसार क्षत्रिय धर्माचेच अभिषेक्त सम्राट होऊ शकतो आणि शिवबा हे कुणबी होते. तसेच भारतातील सर्व ब्राह्मणांचे आशीर्वाद मिळणे अशक्य होते. या राज्याभिषेकाला विरोध करणाऱ्यांना गप्प करण्यासाठी पंडितांची गरज होती ती गरज काशीच्या गागाभट्टांच्या स्वरूपाने पूर्ण झाली.

सुरुवातीला अडचणी आल्या पण गागाभट्टांनी शिवबांना क्षत्रिय कुलावंत म्हणून स्वीकारले कारण भोसले कुळ हे उदयपूरच्या क्षत्रिय कुळातील होते. तसेच प्रभू रामचंद्रांच्या सूर्य कुळातील शुद्ध क्षत्रिय वंश आहे हे सिद्ध झाले या सर्व खात्रीशीर पुराव्यावरच गागाभट्ट हे महाराष्ट्रात आले. राज्याभिषेकाचा सोहळा अखेर सुरू होणार होता. निमंत्रण-आमंत्रण पाठविण्यात आली विविध प्रांतांच्या राजांना बोलावणे पाठवली गेली. शाही खजाण्याचे दार उघडण्यात आले. ३२ मण सोन्याचे सुवर्ण सिंहासन तयार करण्यात आले.

रायरिकाचे नामांतरण रायगड करण्यात आलं. राज्याभिषेकासाठी सप्त महानद्यांचे पाणी, पवित्र तीर्थांचं पाणी मागविण्यात आलं. सोहळ्यासाठी आठ सुवर्णकलश तयार करण्यात आले. राज्याभिषेकाचा सोहळा थाटात उभा होता. सोहळा होता कोणाचा? मराठा साम्राज्याच्या पहिल्या राजाचा. सोहळ्याची तिथी ठरविण्यात आली. शालिवाहन शके १५ ९६ ज्येष्ठ महिन्याची शुक्ल त्रयोदशी हा शुभ दिवस मुहूर्त म्हणून ठरविण्यात आला.

■

जाणता राजा

– **दिपाली गौतम कदम**
बीएससी तृतीय वर्ष

आपल्या देशात राजे– महाराज का थोडे झाले ? पण न भूतो न भविष्यती असा हा जाणता राजा. आपल्या देशाला लाभला हे सदभाग्यच होय. मानवी सद्गुणांचे प्रतीक असा उल्लेख पंडित नेहरूंनी शिवाजी राजांच्या बाबतीत केला. शिवाजी राजे स्वराज्यासाठी, तू राज्यासाठी जगले. आदर्श राजा असा असावा, हे त्यांच्या चारित्र्यावरून समजते. पण आजची स्थिती तर फार वाईट आहे. कुंपणानेच शेत खावे तसा प्रकार चालला आहे. ज्या स्वराज्याची स्वप्ने शिवाजी राजांनी बघितले त्या स्वप्नांची पहाट अजून झालेलीच नाही. आज राजकीय अंदाधुंदीचा कहर माजला आहे. भ्रष्टाचार, गुन्हेगारी यांना खतपाणी मिळत असल्याने देशरुपी वृक्षाला कीड लागली आहे. आज शिवाजी राजे असते तर हे बघून त्यांना आश्चर्य झाले असते.

अंधांच्या मार्गात प्रकाशाचा झोप दिव्यत्व देतो तसं राजाचं जीवन होतं. लहानपणापासून त्यांनी फार महागाची माणसे जमविली होती. कितीही रक्कम दिली तरी न मिळणारे हिरे त्यांनी मिळविले होते. कशाच्या जोरावर तर हृदयातील स्नेहाच्या जोरावर हृदय अर्पण करून त्यांनी एक एक दागिना उचलला. त्यांनी कुशल नेतृत्व केले अतुलनीय शौर्य, धैर्य, दृष्टेपणा, चाणाक्ष बुद्धी, निर्व्यसनी, सर्वधर्म सहिष्णुता, गुणग्राहकता, ज्वलंत राष्ट्रभक्ती हे सर्व त्यांच्या स्थायी होते. आज ते असते तर देशाचा कायापालट करून टाकण्यासाठी ते अधीर झाले असते. आजच्या नेत्यांना, आजच्या समाजाला, आजच्या नागरिकांना त्यांनी योग्य मार्गदर्शन केले असते. स्वच्छ व सुरक्षित राज्यकारभार हा आदर्श राजाचा आत्मा आहे हे त्यांनी प्रत्यक्ष कृतीने पटवून दिले असते. महाराष्ट्र हा आनंद भवन व्हावा हे त्यांचे स्वप्न होते. विज्ञानाची कास धरून प्रगतीचे उंच मनोरे त्यांनी गाठले असते. रयतेच्या सुखासाठी ते जगले असते. आज तर रयतेचे रक्षकच त्यांचे भक्षक बनले आहेत. भ्रष्टाचाराचे वारे तुफान सुटले आहे. अन्यायाला उधाण आले आहे, राजकीय डावपेचात माणूस चुरगळला जात आहे. शिवाजीराजे असते तर त्यांचा दरारा, त्यांची नजर, त्यांचा न्याय, त्यांचे आदर्श या सर्वांचा ठसा देशावर उमटला असता. सुराज्यांची पहाट

आली असती, परस्त्री मातेसमान मानली गेली असती. कल्याणच्या सुभेदाराची सून कल्याणच्या खजिन्यासह जेव्हा आणली गेली, तेव्हा महाराजांनी तिला साडीचोळी देऊन परत पाठवली. असा स्त्रीचा सन्मान आज झाला असता. तिच्यावर अन्याय करणाऱ्याला राझाच्या पाटलासारखी हातपाय तोडण्याची शिक्षा मिळाली असती. आज राजे असते तर कोपर्डी सारखे प्रकरण घडलेच नसते.

शिवरायांच्या कार्यरूपी दशदिशा उजळल्या त्यांचे स्मरण भावी पिढ्यांसाठी एक चिरंतन आदर्श ठरणार आहे. सद्गुणी, धर्माचरणी, व संयमशील अशा शिवरायांचे जीवन प्रेरणादायी आहे. शिवरायांचे स्मरण राष्ट्रीय उत्थानासाठी आवश्यक आहे. शिवाजी महाराज आज असते तर आजचा भारत पाहून व्यथित झाले असते. आज दारिद्र्य, लूट, भ्रष्टाचार, बॉम्बस्फोट, स्वार्थी राजकारण व त्यात रुतलेली भारतमाता अश्रू गाडीत आहे. देशासाठी प्रसंगी प्राण देऊन भारत भूमीचे रक्षण करणारे नेतेआपल्याच देशात होऊन गेले. न्यायप्रिय व कर्तव्य कठोर असे शिवाजी राजे.

■

युगप्रवर्तक, लोककल्याणकारी राजा छत्रपती शिवाजी महाराज...

– भुसावळ कोमल विशाल

अखंड महाराष्ट्राचे आराध्य दैवत, कुळवाडी भूषण, बहुजन प्रतिपालक राजे, महाराष्ट्राच्या देव्हाऱ्यात ज्यांची पहिले स्थान असणारे हिंदू कुलावंतस, ज्यांच्या भक्तीला जोड नाही, शौर्याला तोड नाही, जो अथांग आहे सागराला, ज्याचे छत्र म्हणजे आभाळासमान, उगवत्या सूर्याची शान, मराठ्यांच्या मनातील धगधगता स्वाभिमान म्हणजे, छत्रपती शिवाजी महाराज.....

पु. ल. देशपांडे यांनी एके ठिकाणी खूप सुंदर म्हटले होते की, राजे महाराजांच्या काळात एखाद्या राजाच्या गळ्यात कितीही सोन्या-मोत्यांचे अलंकार असले तरीही आवर्जून कवड्यांची माळ राजे धारण करायचे. याचे विचार करायला लावणारे कारण म्हणजे, राजाने प्रजेच्या सुखापुढे, कल्याण पुढे स्वतःचे सुख-दुःख, आराम कवडीमोल समजायचा असतो. राजाला सारी सुखे त्याच्या पायाशी लोळण घेत असतानाही उपभोग शून्य स्वामी असे म्हटले जायचे ते याचमुळे.

छत्रपती शिवाजी महाराजांना आपण जेव्हा युगप्रवर्तक म्हणतो तेव्हा शिवछत्रपतींच्या जन्मापूर्वीचे युग कसे होते आणि शिवछत्रपतींच्या राज्यकारभारातून नेमके कोणते युग सुरू झाले हे पाहावे लागते. ते म्हणजे छत्रपतींचे सरदार व अन्य पदाधिकारी यांपैकी कुणालाही छत्रपतींनी वतने दिली नाहीत. वतनदारी पद्धत बंद करून वेतन सुरू केले. वतनदारी पद्धत बंद करण्याचा क्रांतिकारी निर्णय त्यांनी घेतला.

महाराजांची धार्मिक सहिष्णुता व जातीभेद न मांडण्याची प्रगल्भता ही विशेष उल्लेख करावी अशी आहे. महाराजांच्या विरोधात लढणारे मोगल, निजाम, आदिलशहा, कुतुबशहा हे धर्माने भले मुस्लिम असतील पण यामुळे शिवरायांनी मुस्लिमांचा कधीही द्वेष केला नाही.उलट लढाईत कुराणाची एखादी प्रत हाती आली तर मोठ्या भक्ती भावाने ते आपल्या मुस्लिम सैन्याच्या हाती देत. समोर मुस्लिम राजे असताना सरसेनापती नूरखान वेग होता. काझी हैदर हा वकील होता. आरमार प्रमुख दर्यासारंग हा मुस्लिम होता. बाबा याकूत हे त्यांना आदरस्थानी असणारे संत होते. एवढेच नाही तर आग्र्याच्या वेढ्यात त्यांच्या मंचावर झोपून शिवछत्रपतींच्या सुटकेसाठी स्वतःचा जीव धोक्यात घालणारा मदारी मेहतर हा मुस्लिम होता. या उलट शिवरायांच्या विरोधात शत्रू कडून लढणारे अनेक महाराष्ट्रीयन हिंदू सरदार होते. त्यामुळे शिवरायांनी प्रत्येक माणसाला त्याची

योग्यता पाहून काम दिले व ती योग्यता त्या व्यक्तीकडे असेपर्यंतच ते पद त्या व्यक्तीकडे राहू दिले.

लोककल्याणकारी राजा म्हणून शिवरायांना संबोधले जाते. हे समजण्यासाठी महाराजांचे तीन पैलू समजून घ्यावे लागतात. महाराजांची चरित्र, विचारसरणी, प्रजे प्रती असलेली कार्यपद्धती महाराजांच्या स्वराज्याचा केंद्रबिंदू बहुजन समाज आणि शेतकरी समाज होता. शेतकऱ्यांच्या काडीलाही हात लावला तर याच मातीत त्याला जिवंत गाडले जाईल, अशी निर्भीड गर्जना एका वाघाची होती. राज्यक्रांती ऐवजी समाज क्रांतीवर विशेष भर यांनी दिला ते छत्रपती शिवराय होते. छत्रपती शिवरायांचा लढा हा कोणत्याही व्यक्तिगत लाभासाठी नव्हता तर तो परिवर्तनासाठी होता. सर्व मानवी अधिकार नाकारलेल्या जनतेला सन्मानाने जगता यावे यासाठी स्वराज्य पाहिजे होते. त्यामुळे रयतेच्या मानसिकतेत बदल करून महाराजांनी राजकीय, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रातील गुलामगिरी मोडून काढली.

शिवरायांचे कार्य म्हणजे शहाजीराजे व जिजाऊंचे विचार कृतीत आणणारे शिवकार्य होय. शिवरायांचे वडील शहाजी महाराज यांनी शिवरायांना वयाच्या बाराव्या वर्षीच दिलेली शिवराजमुद्रा स्पष्टपणे विश्ववंदिता असा उल्लेख करते. याचाच अर्थ शिवाजी महाराजांनी विश्वबंधुता, विश्वशांती, विश्व सौख्य, विश्व भरभराट, विश्व विकास अशी उदात्त भावना मनी ठेवूनच स्वराज्याची बांधणी केली होती.

महाराज धर्मनिरपेक्ष, न्यायी, समतावादी, निर्व्यसनी, चारित्र्यसंपन्न होते. त्यांची राजकारण जातीयवादी, धर्मवादी, भाषावादी नव्हते तर लोककल्याणकारी होते. वडिलांच्या संपत्तीत स्त्रियांना हक्क प्रथम देणारे छत्रपती शिवराय होय. महिलांना प्रथम स्वातंत्र्य छत्रपती शिवरायांनी दिले. शिवराय दूरदृष्टी वादी होते. शिवरायांमुळे स्वराज्यातील, महाराष्ट्रातील सह्याद्रीच्या दर्या खोऱ्यात जे झोपले होते ते जागे झाले. जे जागे होते ते उभे राहिले, जे उभे होते ते चालू लागले आणि चालणाऱ्यांच्या खांद्यावर स्वराज्य उभे राहिले होते...

छत्रपती म्हणजे
छ- छत्तीस हत्तीचे बळ असणारे
त्र - त्रस्त मुघलांना करणारे
प- परत न फिरणारे
ती- तिन्ही जगात जाणणारे
शि- शिस्तप्रिय
वा- वाणिज्य तेज
जी- जिजाऊंचे पुत्र
म- माघार न घेणारे
हा-हार न मानणारे
रा-रयतेची राजे
ज- जाणता राजा

म्हणजे युगप्रवर्तक लोककल्याणकारी राजा छत्रपती शिवाजी महाराज होय. त्यांच्या कार्यामुळे त्यांचे नाव इतिहासात अजरामर आहे. ज्यांच्यामुळे शत्रूही नतमस्तक होत असे अशा राजाचे कर्तृत्व विशेषणीय आहे.

■

छत्रपती शिवाजी महाराज

– कदम कोमल सिताराम
बीकॉम तृतीय वर्ष

भारताच्या इतिहासात होऊन गेलेल्या लोकोत्तर पुरुषांमध्ये छत्रपती शिवाजी महाराजांचा उल्लेख आदराने केला जातो. सामान्य जनतेला सुखी करण्यासाठी त्यांनी अनेक उपाययोजना आणल्या.

छत्रपती शिवाजी महाराजांनी सर्व जाती वर्गाचे नेतृत्व केले. वंशपरंपरेने न नेमका गुणवत्तेप्रमाणे कर्तुत्ववान व्यक्तीला महत्त्वाच्या पदावर नेमले. स्वातंत्र्यासाठी त्यांनी सर्व जाती-धर्माच्या लोकात लढण्याची जिद्द निर्माण केली. डामडौल, जैनबाजी, विलासी वृत्ती यांना त्यांनी भय दिला नाही

नियम मोडणाऱ्याला कठोर शासन केले जाई. म्हणूनच महाराजांची प्रशासकीय व्यवस्था सर्वसामान्यांच्या हिताची आणि गतिमान ठरली.

छत्रपती शिवाजी महाराजांची किर्ती ही मराठी माणसासाठी अभिमानाची बाब आहेच. पण आंतरराष्ट्रीय कीर्तीचे राजे आणि जागतिक वर्गाचे योद्धे म्हणूनही शिवरायांची ओळख आहे. यातील आणखी एक बाब विशेष म्हणजे शिवाजी महाराज यांच्याशी लढले त्यांनीही महाराजांचे श्रेष्ठत्व मान्य केले. त्यांच्यातील नेता, धुरंदर सेनानी, जाणता राजा अशा असंख्य गुणांची ओळख पदोपदी आहे. महाराजांचाकाळ लोटून इतके वर्ष झाले तरीही त्यांचे इतिहासातील स्थान आणि मान यांना जराही धक्का लागू शकला नाही. त्यांच्याबाबत जागतिक स्तरावर केलेल्या जाणत्या गोष्टी भारतीयांसाठी अभिमानाची बाब आहे. ते एक थोर महापुरुष होते त्यांच्यामुळेच इतर लोकांना कोणत्याही परिस्थितीत लढण्याची प्रेरणा मिळत होती.

यशवंत किर्तीवंत
सामर्थ्यवंत वरदवंत
पुण्यवंत नीतीवंत जाणता राजा

छत्रपती शिवाजी महाराजांचे जीवनच एवढे भव्य आहे की ज्याचे जेवढे अवलोकन करावे तेवढे कमीच आहे. जगातील थोर, पराक्रमी आणि मुत्सद्दी राजांची यादी समोर धरली तर शेवटी शिवाजी महाराजांची बरोबरी करणारा मोहरा सापडणे दुर्मिळ आहे. नेपोलियन बोनापार्ट, सिकंदर किंवा दुसरे कोणतेही राजे उदाहरणार्थ घेतले तरी छत्रपती शिवाजी महाराज यांच्या पेक्षा काकणभर अधिकच आहेत.

आज महाराजांचे नाव वापरून राजकारण करणाऱ्यांची संख्या कमी नाही. सत्ता व मतांच्या राजकारणासाठी छत्रपती शिवाजी महाराज फक्त

आमचेच आहेत अशी जणू स्पर्धाच लागलेली असते. वाईट एकाच गोष्टीचे वाटते की छत्रपतींच्या नावाचा जयघोष करणाऱ्यांचा महाराष्ट्रात सुकाळ आहे, पण त्यांच्या विचारांना कृतीत आणणाऱ्या लोकांचा मात्र दुष्काळ आहे. आपण शिवचरित्र महाराजांच्या गुणांना आत्मसात केले आहे का? महाराज संपूर्ण निर्व्यसनी होते आज आपण आपले पुढारी राज्यकर्ते निर्व्यसनी आहेत का? त्यांनी लावून दिलेली राज्यपद्धती जीवनपद्धती याचा पूर्ण विसर पडलेला आहे. जसा जसा शिवजयंती उत्सव जवळ येतो तसतसे आपले डीपी बदलायला लागतात. शिवजयंतीचा दिवस मावळ्याला लागतो आणि मागे फक्त अंधार उरतो. छत्रपती शिवाजी महाराजांचा जन्म १९ फेब्रुवारी १६३० रोजी शिवनेरीवर झाला. आणि सहा जून १६७४ रोजी रायगड येथे छत्रपती म्हणून त्यांचा राज्याभिषेक झाला. आजही छत्रपती शिवाजी महाराज धर्मनिरपेक्ष राजवटीसाठी ओळखले जातात. ज्यांनी मुघलांविरुद्ध लढा दिला आणि स्वराज्य स्थापन केले.

इस्त्राईल, जापान, व्हिएतनाम, जर्मनी यांसारख्या देशांनी शिवाजी महाराजांचा खडान खडा अभ्यास करून स्वतःच्या जगण्याची काहीतरी ठरवलेली आहे. त्यांचे तो काटेकोरपणे पालन करतात. आणि तेच त्यांच्या प्रगतीचे गमक आहे असे सांगतात.

आजच्या विश्वविद्यालयात शिकवली जाणारी सर्व व्यवस्थापन तत्व आपल्या स्वराज्यात दिसतात. झश्ररपपळपस, ेसरपळीरींळेप, ऊळेपशलींळे, लेपींश्र रपव ींपळीं ेष लेाारपव छत्रपती शिवाजी महाराज म्हणजे असा पहिला मराठी माणूस ज्यांनी मुंबई विकत घेण्यासाठी इंग्रज आणि पोर्तुगीजांना टेंडर दिलं होतं.

गेली चारशे वर्षे अखंड अविरत डोक्यावर घेणाऱ्या महाराजांचा किंबहुना विचाराच्या दैवताला आज खरोखरच डोक्यावर घेण्याऐवजी डोक्यात घेण्याची वेळ आली आहे. जागतिक इतिहासात मध्ययुगीन कालखंड हा अंधार होता. या अंधार युवर छत्रपती शिवरायांनी रयतेचे राज्य स्थापन करून आधुनिक लोकशाही चा पाया रचला. सर्वधर्मसमभाव, समता, संवेदनशीलता, मानवता, आपले व्यवस्थापन यामध्ये त्यांनी आदर्श घालून दिला.

छत्रपती शिवाजी महाराजांनी स्वराज्याची शपथ घेतली होती. याची साक्षीदार म्हणून एक किल्ला आहे तो म्हणजे रायरेश्वर किल्ला. ते फक्त सोळा वर्षाची असताना छत्रपती शिवाजी महाराजांनी रायरेश्वर किल्ल्यावर स्वराज्याचे तोरण बांधले. अशा प्राकृतिक विचारांच्या राजाला विनम्र अभिवादन.

गगनभेदी नजर ज्याची
डोळ्यात ज्याच्या अंगार
तो माझा जाणता राजा
श्वासात रोखुनी वादळ
डोळ्यात रोखली आग
देव आमचा छत्रपती
एकटा मराठी वाघ
स्थापून हिंदी स्वराज्य आपले
शौर्याने लिहिली इतिहास गाथा
असा हा जाणता राजा माझा
तयाच्या चरणी झुकवितो माथा